चन्दामामा
1st June

Photo by D. Kasbekar

पुरस्कृत परिचयोक्ति

गिरे क्यों ?

प्रेषक :
रवि अग्रवाल, आगरा

सुगन्धी देनेवाले!
Remy
Remy
रेमी
पाउडर
और स्नो

चन्दामामा

जून १९५९

आप पढ़ कर हैरान होंगे कि...

पौधे भी हमारी तरह खाते पीते हैं। आप कहेंगे कि पौधे हवा खाते हैं, पानी पीते हैं, बस! लेकिन यह सच है कि पौधे जंतु भी खाते हैं—सभी नहीं, पर कुछ। अब इस चित्र में दक्षिणी अमरीका का एक ऐसा पौधा देखिये जिसका नाम है "सुन्दरता की देवी का मक्खी पकड़ने का फंदा।" चित्र में देखिये, गोलाकार में फंदे को जुदा जुदा दिखाया गया है। नं. १ में मक्खी आई। २ में पत्ते पर बैठी। ३ में पत्ते के पट झट से बंद होने लगे और ४ में मक्खी हजम!

अब इन दो मक्खियों को देखिये। ये हिंद महासागर के करगुलेन द्वीप में पाई जाती हैं। इन्हें यह पौधा नहीं खा सकता, क्योंकि ये मक्खियाँ उड़ कर इस पर बैठ नहीं सकतीं और न ही उड़ कर दक्षिणी अमरीका तक जा सकती हैं। जानते हैं क्यों? इस लिये कि इन के पर नहीं होते। परों के अलावा इन में और घरेलू मक्खियों में कोई अन्तर नहीं। मक्खियों से मनुष्य को सदा बचना चाहिये क्योंकि ये बीमारी फैलाती हैं।

बीमारी केवल मक्खियों द्वारा ही नहीं बल्कि गंदगी से भी फैलती है। आप चाहे कुछ भी करें गंदे जरूर हो जाते हैं और गंदगी में बीमारी के कीटाणु होते हैं जिन से तंदुरुस्ती को खतरा रहता है। गंदगी के इन कीटाणुओं को लाइफ़बॉय साबुन से धो डालिये और अपनी तंदुरुस्ती की रक्षा कीजिये। लाइफ़बॉय साबुन से नहाना अच्छी आदत है।

L. 282-30 HI

हिन्दुस्तान लीवर लिमिटेड ने बनाया

वीर और गप्पी
मुन्नू चुन्नू

अरे चुन्नू, बच के! बड़ा तेज़ घोड़ा है!

ऐसे कई घोड़े देखे हैं मैं ने! इन बाहों में इतनी ताक़त है कि...

...चलती मोटर को बायें हाथ से रोक दूँ...

...छाती पर से हाथी गुज़र जाये और मैं हंसता रहूँ...

मचले हुये बैलों को दाँतों से खींच लूँ !

कमाल के बहादुर हो तुम! लेकिन देखो तुम्हारे केले पर बकरी की नज़र है!

अब रोते क्या हो! तुम्हें बीस बार कहा ताक़तवर बनना है तो डींग मारने की जगह रोज़ दूध पियो और 'डालडा' में पका खाना खाओ!

आधुनिक यन्त्र
और कुशल
कार्य-कर्ताओं से
सुसज्जित,
सुव्यवस्थित
वृहत संस्था
PRASAD
PROCESS
आफसेट प्रिन्टर्स

पशुपंछियों की यह छोटी-सी दुनिया

कलकत्ता में अलीपुर के सुन्दर बगीचे में करीब सारी दुनिया के जीते-जागते जंगली जानवरों और चिड़ियों का अपूर्व संग्रह है, वे वहाँ रखे गये हैं कि लोग उन्हें देखें। इस देश में जितने चिड़ियाखाने हैं, यह उनमें सब से बड़ा और सब से सुन्दर है।

चिड़ियाखाना चार दीवारियों से घिरा और फूलती बेलों और झाड़ियों से सजा है। स्वच्छ जल से भरा तालाब में सुन्दर हंस इस तरह तैरते रहते हैं मानों सफेद कागज की नावें चल रही हों। पेड़ों की चोटियों पर बैठी और पिंजड़ों में बन्द चिड़ियाँ चहचहा कर और फुदक-फुदक कर दर्शकों का स्वागत करती हैं, जब कि उधर एक कुंज की तरफ मोर अपने रंग-बिरंगे पर फैलाकर नाचना शुरू कर देता है। उस तरफ एक बच्चा चित्तेदार शान्त हिरन को चना खिला रहा है जब कि पास ही बारह-सिंघा चर रहा है। कुछ दूरी पर एक आदमी शान्त कंगारू को मूंगफली दे रहा है। एकाएक पिंजड़े में बाघ दहाड़ उठता है और दूसरे पिंजड़े में सिंह चुप-चाप आराम से बैठा रहता है। इधर पानी में दरियाई हाथी चिंघाड़ उठता है और गैंडा नाले के कीचड़ में सनकर शरीर को शीतल कर रहा है। ज़ेबरा और जिराफ की, वनमानुषों और चितकबरे भालुओं की, हाथियों और ऊँटों की यह छोटी-सी दुनिया बड़ी विचित्र है। तभी तो रोज सैकड़ों आदमी यहाँ आते हैं और इन दृश्यों का आनन्द लेते हैं। इसके अलावा लोग यहाँ के हरे भरे मैदान में विहार (पिकनिक) करने आते हैं, जलपान करते हैं और चाय पीते हैं। और वे जो चाय पीते हैं वह ब्रुक बॉंड चाय होती है जो दर्शनार्थियों और विहार (पिकनिक) करने वालों की प्रिय पेय है। जी हाँ, सारे हिन्दुस्थान की तरह ही कलकत्ता के लोग भी ब्रुक बॉंड चाय बहुत पसन्द करते हैं।

असल में जब कि चिड़ियाखाना अपने विचित्र जंगली पशुपक्षियों से दर्शकों का जी खुश कर देता है तब ब्रुक बॉंड चाय अपनी अपूर्व सुगन्ध और ताज़गी से उन्हें तरोताजा बनाती है, खुश करती है।

ब्रुक बॉंड इण्डिया प्राइवेट लिमिटेड

BB 256

चन्दामामा

संचालक : चक्रपाणी

हम पिछले कई महीनों से "अहिंसा ज्योति" दे रहे हैं। यह बुद्ध की जीवनी है।

कभी बौद्ध धर्म भारत में सर्वत्र प्रचलित था। अब भी यह संसार के कई अन्य देशों में प्रचलित है।

बौद्ध-धर्म के अपने सिद्धान्त हैं, दर्शन हैं, साहित्य है। परन्तु यह कहना असत्य न होगा कि बौद्ध-धर्म का सबसे बड़ा आकर्षण बुद्ध की जीवनी ही है।

इस लम्बे अर्से में बुद्ध की जीवनी पर भी बहुत नमक मिर्च लगाई गई है, इससे कदाचित् बुद्ध का महत्व बढ़ता ही है, घटता नहीं है।

हम आशा करते हैं कि हमारे पाठक "अहिंसा ज्योति" को पसन्द कर रहे होंगे।

वर्ष : १०   जून १९५९   अंक : १०

महाभारत

भीष्म के पिता शान्तनु महाराजा थे। प्रदीप महाराजा के तीन लड़के थे—देवापि, शान्तनु व बाह्लिक। प्रदीप ने राज्य छोड़कर वानप्रस्थ ले लिया। उसकी जगह देवापि को राज्यभार सम्भालना था, पर वह भी वनों में चला गया, और पर्यटन करने लगा। और प्रदीप की गद्दी पर शान्तनु बैठा।

एक दिन शन्तनु जब गंगा के किनारे टहल रहा था तो उसे गंगा स्त्री रूप में दिखाई दी। शान्तनु ने उससे पत्नी होने की प्रार्थना की।

"चाहे....मैं जो कुछ करूँ, तुम्हें सब सहकर चुप रहना होगा, डाँटना डपटना न होगा। यदि यह मानते हो, तो मैं तुमसे विवाह करने के लिए तैयार हूँ।" यह शान्तनु मान गया।

गंगा से शान्तनु के सात लड़के पैदा हुए। गंगा ने, ज्योंहि वे पैदा हुए त्योंहि उनको ले जाकर गंगा में फेंककर उनको मरवा दिया। यह देख शान्तनु को बहुत दुख हुआ,—क्योंकि वह उसे बुरा भला न कह सकता था, इसलिए, उसने वह सब कुछ चुपचाप सह लिया।

गंगा ने आठवें पुत्र को जन्म दिया और उसे भी मारना चाहा। तब शान्तनु से न रहा गया। उसने गंगा को डाँटा डपटा। गंगा ने उस लड़के को, शान्तनु को देते हुए कहा—"राजा, क्योंकि तुमने अपना समझौता तोड़ा है और मुझे डाँटा है, इसलिए मैं तेरी पत्नी नहीं रही। अब मैं बताती हूँ कि मैंने तेरे पुत्रों को क्यों मारा था। एक समय अष्टवसुवों ने वशिष्ट की कामधेनु को चुराने का प्रयत्न किया।

मुख - चित्र

उनको इस काम को प्रेरित करनेवाली थी प्रभास नाम के वसु की पत्नी। वशिष्ट ने उसे शाप दिया कि वे मानव जन्म लें। प्रभास को ही यह शाप दिया कि वह चिरकाल तक मानव रहे। वे आठों मेरे गर्भ से पैदा हुए। सातों को, पैदा होते ही, मैंने उनको जन्म-मुक्ति दिलवादी। यह प्रभास है। यह बहुत दिनों तक जीवित रहकर वसुओं में जा मिलेगा।" यह कह कर वह चली गई। गंगा और शान्तनु का आठवाँ लड़का ही भीष्म था।

कुछ समय बीत गया। शान्तनु जब यमुना के किनारे शिकार खेल रहा था तो उसे दाशराज की लड़की सत्यवती दिखाई दी। शान्तनु उसे अपनी पत्नी बनाने के उद्देश्य से दाशराज के पास गया।

"राजा, तुम्हारे सत्यवती से विवाह करने पर मुझे कोई आपत्ति नहीं है। परन्तु उसके लड़के का पट्टाभिषेक करना होगा। अगर यह मानते हो, तो तुम्हारा विवाह अभी किये देता हूँ।" दाशराज ने कहा।

शान्तनु यह न माना। जब उसका लड़का भीष्म था, तब वह यह वचन कैसे देता! वह दुखित हो घर वापिस चला आया। भीष्म ने अपने पिता का दुख जानकर, दाशराज के पास जाकर कहा—"आप अपनी लड़की का विवाह मेरे पिता से कीजिये। मुझे राज्य नहीं चाहिये। कहीं आप यह न सोचें कि मेरे पुत्र राज्य केलिए झगड़ा करेंगे इसलिए मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं आजन्म ब्रह्मचारी रहूँगा।" यही भीष्म प्रतिज्ञा थी।
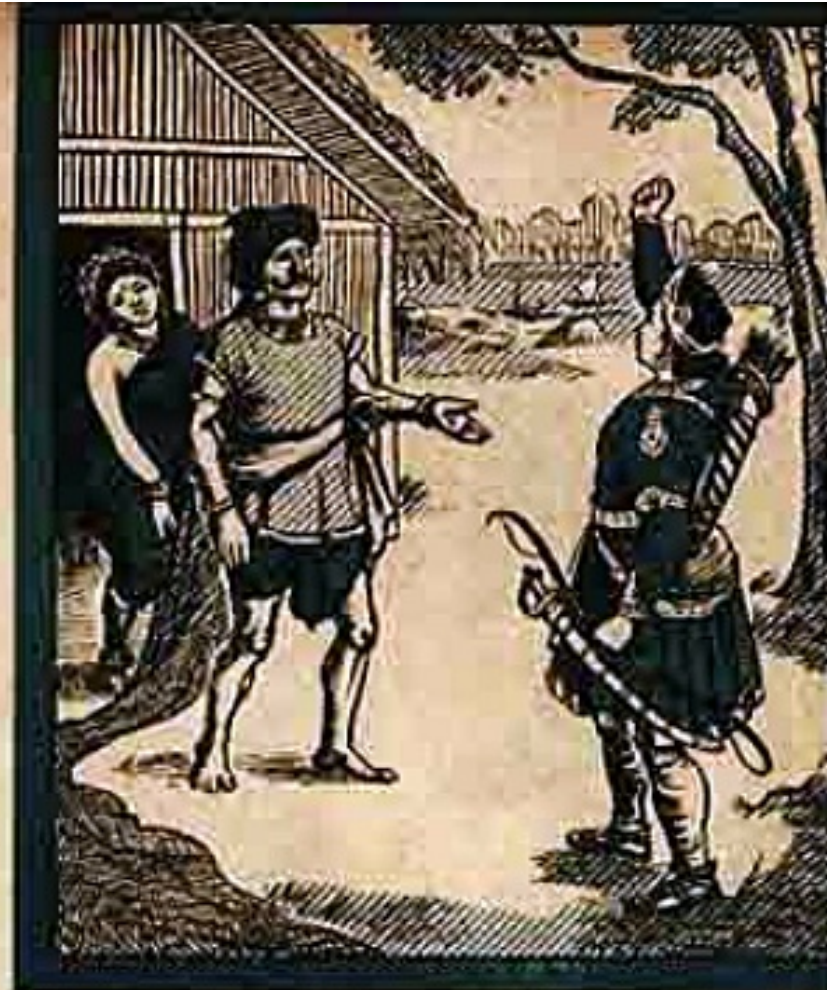
शान्तनु और सत्यवती का विवाह हुआ। चित्रांगद और विचित्रवीर्य उनके दो पुत्र हुये। शान्तनु बहुत दिनों तक राज्य करके

स्वयंवर के लिए भिन्न भिन्न देशों के राजाओं के पास आमन्त्रण भेज रखे थे।

यह जानकर भीष्म, अकेला, रथ में काशी गया। काशी राजा की कन्यायें अपने सौन्दर्य के लिए प्रसिद्ध थीं। जैसे भी हो, भीष्म ने उनका अपने भाई विचित्रवीर्य के साथ विवाह करने का निश्चय किया। भीष्म ने काशी राजा के महल में प्रवेश करके अम्बा, अम्बिका व अम्बालिका को देखा। उन सब राजाओं को भी देखा, जो उनसे विवाह करने के लिए आये हुए थे।

मर गया। तब भीष्म ने अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार चित्रांगद को राजा बनाया और विचित्रवीर्य को युवराजा।

कुछ दिनों बाद चित्रांगद भी मर गया। तब भीष्म ने सत्यवती की अनुमति पर विचित्रवीर्य का राज्याभिषेक किया। और वह उसकी मदद करता राज्य का परिपालन करने लगा।

विचित्रवीर्य सयाना हुआ। भीष्म ने योग्य कन्या से, उसका विवाह करने का संकल्प किया। उसी समय काशी के राजा ने अम्बा, अम्बिका, अम्बालिका के

काशी राजा ने घोषणा करवा रखी थी कि यदि उन राजाओं में, जो उसकी पुत्रियों से विवाह करने के लिए वहाँ आये हुए थे, युद्ध हुआ तो उसी के साथ उनका विवाह होगा जो उस युद्ध में विजयी होगा। इसलिए भीष्म ने सब के देखते देखते उन लड़कियों को लाकर अपने रथ में रखा और स्वयंवर के लिए उपस्थित राजाओं से कहा—"मैं शान्तनु महाराजा का लड़का भीष्म हूँ। मैं काशी राजा की लड़कियों को ले जा रहा हूँ। यदि किसी में शक्ति-साहस है तो इनको छुड़ाले।"

उन राजाओं को गुस्सा आया। उन्होंने अपने सैनिकों को बुलाया। उनसे रथ, हाथी और घोड़े मँगवाकर, उनपर सवार हो, भीष्म से लड़े। भीष्म अपने बाणों से व अस्त्रों से एक समय में, एक साथ सब से लड़ा। उसके सामने राजाओं ने मैदान छोड़ दिया। भीष्म विजयी हुआ।

भीष्म ने काशी राजा की लड़कियों को ले जाकर सत्यवती से कहा—माँ! ये काशीराजा की लड़कियाँ हैं। अनेक राजाओं को युद्ध में हराकर, मैं इनको विचित्रवीर्य की पत्नी बनाकर लाया हूँ।" सत्यवती बहुत आनन्दित हुई। उसने भीष्म को आशीर्वाद दिया—"बेटा, तुम हमेशा इसी प्रकार विजयी होते रहो।"

विचित्रवीर्य के विवाह की व्यवस्था हो रही थी। तब काशी राजा की बड़ी लड़की अम्बा ने शर्माते शर्माते भीष्म से कहा—"भीष्म, मैंने पहिले ही साल्व देश के राजा से विवाह करने का निश्चय कर लिया है। वे भी मुझ से प्रेम करते हैं। यह बात मेरे पिता नहीं जानते। तुम धर्म, कर्तव्य सब जानते हो....मैं जब एक से प्रेम करती हूँ, तब दूसरे से कैसे प्रेम कर सकूँगी! साल्व राजा मेरी प्रतीक्षा करते तड़प रहे होंगे। इसलिए मुझे उनके पास भेज दो।"

यह पता लगते ही भीष्म ने सत्यवती, मन्त्री, पुरोहितों से परामर्श किया और अम्बा को साल्व राजा के पास भेजने का प्रबन्ध किया। वृद्ध ब्राह्मण व दासियों को साथ लेकर अम्बा साल्व राजा के पास गई। उसने साल्व राजा से कहा—"मैं आपके लिए आई हूँ। मैं आपके सिवाय किसी और से विवाह नहीं कर सकती। इसलिए मेरी इच्छा पूरी कीजिये।"

ब्रह्मचर्य की प्रतिज्ञा कर रखी है। वह हम तीनों बहिनों को विचित्रवीर्य की पत्नी बनाने के लिए लाया था। जब मैंने उससे कहा कि मैं आपसे प्रेम करती हूँ तो उन्होंने इन लोगों के साथ मुझे यहाँ भेजा। मेरी बहिनों ने ही विचित्रवीर्य से विवाह किया है। इसमें मैंने ऐसा कौनसा कार्य किया है जो धर्म के प्रतिकूल हो? राजा मैं शपथ खाकर कहती हूँ, मैं आपके सिवाय किसी और को पति नहीं समझती। मुझे मत ठुकराइये।" उसने उससे कई तरह से प्रार्थना की।

साल्व राजा ने यह सुनकर अट्टहास करके कहा—"अम्बा! तुम तो कभी की भीष्म की पत्नी बन चुकी हो। मैं तुमसे विवाह न करूँगा। भीष्म के पास तुम वापिस चली जाओ। मैं किसी और की पत्नी से विवाह करके धर्म का पालन कैसे कर सकता हूँ?"

अम्बा ने साल्व राजा से कहा—"राजा! बिना सच जाने ऐसी बातें न कीजिये। मैं अपनी इच्छा से भीष्म के साथ नहीं गई थी। भीष्म भी मुझसे विवाह करने के लिए मुझे नहीं ले गया था। उसने

परन्तु साल्व राजा ने अपना निश्चय न बदला—"क्यों मुझे यों सताती हो? तुम जहाँ चाहो वहाँ चली जाओ! हम सब से युद्ध करके भीष्म ने तुम्हें अपना बनाया है। भीष्म का नाम याद आते ही मैं गुस्से से काँपने लगता हूँ। मैं तुमसे विवाह नहीं कर सकता।"

अम्बा रोती रोती साल्व नगर से चली गई। वह अपनी दुस्थिति अच्छी तरह समझ गई। वह न अपने पिता के घर की रही न भीष्म की हो पाई। न साल्व की ही बन सकी। इतना सब हो जाने के बाद

हस्तिनापुर जाने में कोई अर्थ नहीं था। यदि गई भी तो भी भीष्म उसका आदर न करेगा। सबने उसके साथ अन्याय ही किया। उसके पिता ने बिना उसकी इच्छा जाने घोषित कर दिया कि वह विजेता से विवाह करेगी। भीष्म भी उसकी इच्छा को बिना जाने अपने रथ में हस्तिनापुर ले आया। आखिर सब बातें साफ साफ कहने पर भी साल्व राजा ने उसको ठुकरा दिया। और तो और अम्बा ने स्वयं अपने साथ अन्याय किया था। जब भीष्म रथ पर चढ़ा रहा था तभी वह उसको साल्व राजा के बारे में बताती तो भीष्म उसे छोड़ देता और साल्व राजा उसे स्वीकार कर लेते।

यद्यपि उसके जीवन को कई ने बिगाड़ा था पर उसका सारा कोप भीष्म पर केन्द्रित था। वह साल्व नगर से निकलकर वन में मुनियों के आश्रम में चली गई। रात उसने वहीं काटी। मुनियो ने उसकी करुणा भरी कहानी सुनी।

उन मुनियों का एक आचार्य था, जिसका नाम शैखावत्य था। उसने अम्बा से कहा—"हम सब तो मुनि, तपस्वी हैं।
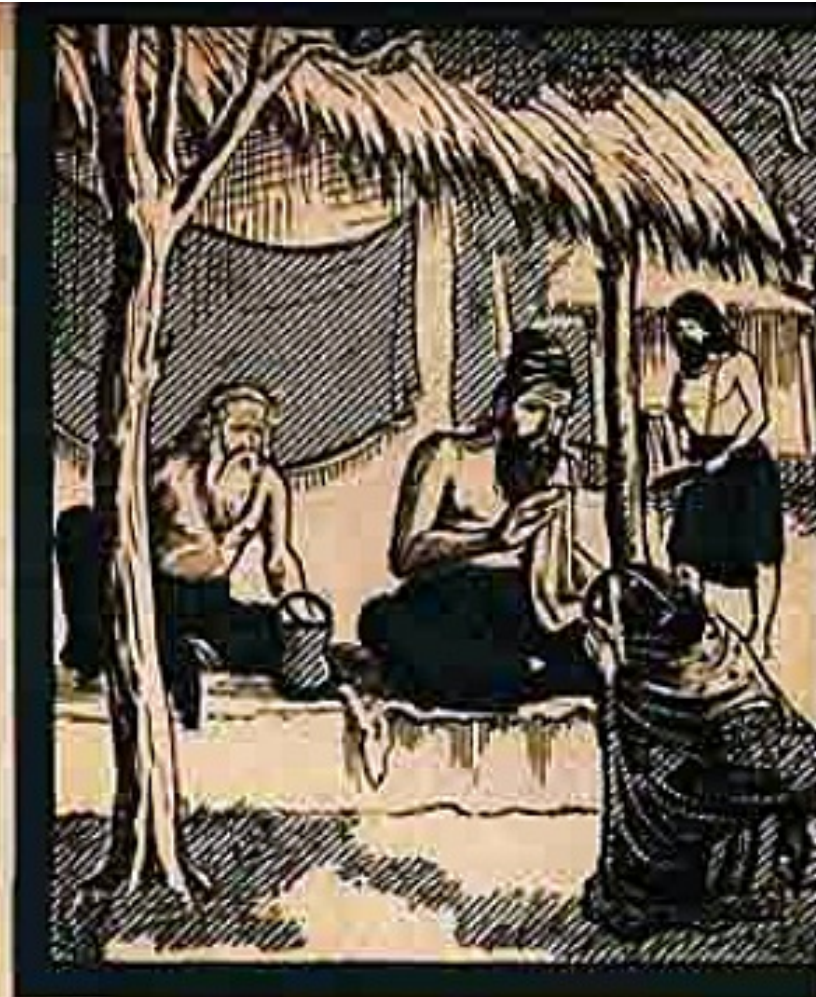
हम तेरे कष्टों के निवारण के लिए क्या कर सकते हैं!"

अम्बा ने दोनों हाथ जोड़कर नमस्कार करके कहा—"स्वामी, आपकी कृपा मेरे लिए काफी है। यदि आप मुझे तपस्या करना सिखादें तो मैंने कठोर तपस्या करने का निश्चय किया है। पिछले जन्मों के पाप के कारण मेरी यह हालत है कि धूप पानी से बचने के लिए कोई आश्रय नहीं है। मेरी और कोई अभिलाषायें भी नहीं रह गई हैं। मुझे भी आपके साथ तपस्या करने का अवकाश दीजिये।"

अम्बा को देखकर आश्रमवासियों को दया आई। उन्होंने आपस में उसकी समस्या पर सोचा विचारा। कई ने सुझाया कि उसको पिता के पास भेज देना उचित था। कई ने कहा कि उसकी दुस्थिति का कारण भीष्म ही था। कई और ने जोर दिया कि जैसे भी हो उसको साल्व राजा के पास पहुँचाना ही उत्तम था।

आखिर सब ने मिलकर अम्बा से कहा—"तुम्हारे लिए पिता के घर वापिस जाना ही श्रेयस्कर है। स्त्री को या तो पिता के घर रहना चाहिये नहीं तो पति के घर। तीसरी जगह रहना गलत है। हो सकता है कि पिता के घर तुम्हें सुख न मिले पर यहाँ तपस्या करने से तो वहाँ कितना ही अच्छा रहेगा। तुम जैसी कोमल राजकुमारियों के लिए तपस्या सम्भव नहीं है।

यही नहीं, अगर यह पता लग गया कि इस आश्रम में तुम जैसी सुन्दरी है तो जाने कहाँ कहाँ से राजा तुम्हें यहाँ खोजते-खोजते आयेंगे। इससे काफी गड़बड़ी होगी।"

अम्बा ने नमस्कार करके प्रार्थना की "महाशयो, मैं कभी बहुत ही आदर के साथ अपने पिता के घर पाली पोसी, बड़ी की गई। वहाँ जाकर तिरस्कृत होना मुझे बिल्कुल पसन्द नहीं है। मैं काशी वापिस जाकर पिता को अपना मुंह नहीं दिखा सकती। इसलिए मैं भी इस अरण्य में तपस्या करूँगी। इस तपस्या के कारण सम्भव है कि मैं परलोक में सुख पाऊँ। मेरी इच्छा है कि जो कष्ट अब मैंने भुगते हैं, वे कष्ट मुझे कहीं और, किसी जीवन में न भुगतने पड़े। इसलिए कृपा करके मुझे तपस्या व्रत में दीक्षित कीजिये।"

[११]

[चन्द्रवर्मा, जो भेरण्ड पक्षियों के पंखों में छुपा हुआ था, झील में जा गिरा। फिर झील के मगरों से जान बचाकर, वह झील के किनारे वाले बाग में गया। एक दिन रात को चन्द्रवर्मा शंख के पहाड़ पर चढ़ रहा था कि उसको, पहाड़ के नीचे, पत्थरों में, जादूगरनी कपालिनी दिखाई दी। बाद में....]

पत्थरों के बीच बेहोश-सी पड़ी कपालिनी को कराहता देख चन्द्रवर्मा हैरान रह गया। उसे तुरत अग्निपक्षी की वह बातचीत याद हो आई, जो उसने भेरण्ड पक्षियों से की थी। उसने सोचा कि वह भेरण्ड पक्षियों के हाथ आ गई होगी और शंख के इस पहाड़ी प्रदेश में लाकर पटक दी गई होगी।

"कपालिनी! तुम्हें ऐसी कोई चोट तो नहीं लगी है, जिससे जान को खतरा हो! वे भेरण्ड पक्षी कहाँ हैं!" चन्द्रवर्मा ने पूछा।

कपालिनी ने धीमे से कहा—"जोर से न बातचीत करो। किसी गुफ़ा में चला जाना अच्छा है। वहाँ जाकर सब कुछ बताऊँगी। मेरी जान को कोई खतरा नहीं है। अपने हाथ का सहारा दो। तब मैं उठकर चल सकूँगी।" चन्द्रवर्मा कपालिनी की तरफ़ झुका—दाहिने हाथ

से उसका कन्धा पकड़कर, उसे उठने में मदद की। फिर कपालिनी ने चन्द्रवर्मा का हाथ पकड़कर चलते हुए कहा—"वर्मा, उन पेड़ों के पीछे, लगता है कोई गुफ़ा है। चलो, वहाँ चलें।"

छोटे-छोटे पत्थरों के ऊपर से चढ़ते उतरते थोड़ी देर में, वे पहाड़ की तराई में, एक अन्धेरी गुफ़ा में पहुँचे। उस गुफ़ा का मुँह बहुत तंग था। उसको चारों तरफ़ से पेड़, पौधे, पत्तों ने ढक रखा था। गुफ़ा अन्दर काफ़ी बड़ी थी। कहीं कहीं ऊपर के छेदों से प्रकाश की छोटी-छोटी किरणें आ रही थीं।

कपालिनी के एक कोने में बैठने के बाद चन्द्रवर्मा ने पूछा—"क्या मान्त्रिक शंख को मालूम हो गया है कि तुम इस पर्वत प्रदेश में लाई गई हो, कपालिनी!"

कपालिनी मुस्कराई। उसे मरने का डर कहीं भी न था।

"वर्मा! अगर शंख को मालूम होता कि मैं इस पर्वत प्रदेश में हूँ, तो वह अब तक मुझे मार देता। मैं कल सवेरे से इन पत्थरों में पड़ी थी। जिस भैरण्ड पक्षियों ने अचानक मुझे पकड़ना चाहा था वे काल सर्प के हाथ लगे और मार दिये गये।" कपालिनी ने कहा। "अगर यह बात है तो हमें डरने की कोई ज़रूरत नहीं है। मैं इस अन्धेरे में जाकर पता लगता हूँ कि शंख का पूजा गृह वगैरह, कहाँ है।" कहता चन्द्रवर्मा उठा।

कपालिनी ने चन्द्रवर्मा को सावधान करते हुए कहा—"वर्मा, उस अग्नि पक्षी की बात न भूल जाना, रात के समय उस पक्षी के विषय में चौकन्ना रहना होगा, दिन के समय शंख से बचकर रहना होगा।—अगर आज रात अग्नि पक्षी से हमें छुटकारा न मिला तो हमारा भला

न होगा। उसकी खबर लेने के लिए कालसर्प कोशिश कर रहा है!"

"क्या कालसर्प यहाँ आया हुआ है! बहुत आश्चर्य हो रहा है।" चन्द्रवर्मा ने कहा।

चन्द्रवर्मा की बात सुनकर कपाल्निी हँसी। "वर्मा! मैं जान गई कि कालसर्प को मुझसे अधिक भरोसा तुम पर है। यकायक जब तुम मुझे यहाँ दिखाई दिये, तो मुझे कोई आश्चर्य नहीं हुआ। मैंने यह भी नहीं पूछा, तुम इतनी जल्दी यहाँ कैसे पहुँच गये! इसीलिए क्योंकि कालसर्प ने तुम्हारे बारे में मुझे सब कुछ बता दिया था। जब मुझे मालूम हुआ कि तुमने आश्चर्यजनक वृक्ष का फल खाया है, तभी मैं जान गई थी कि तुम यहाँ सुरक्षित पहुँच सकोगे।" कपाल्निी ने कहा।

कपाल्निी ने अभी अपनी बात खतम भी न की थी कि उस इलाके में बिजली-सी कौंधी और सब जगह प्रकाश हो गया। चन्द्रवर्मा अचरज करता, गुफ़ा के मुँह के पास आया। उसने झाँककर बाहर देखा। पास के पेड़-पौधों के पीछे अग्नि पक्षी

दिखाई दिया। तुरत फण उठाकर कालसर्प का उसपर झपटना उसने देखा।

"कपाल्निी! अग्नि पक्षी के ऊपर कालसर्प झपट रहा है। मैं जाकर कालसर्प की सहायता करूँगा!" चन्द्रवर्मा ने कहा।

"नहीं, ऐसा न करो।" कहती कपाल्निी गुफ़ा के द्वार के पास आई। बाहर झाँककर उसने कहा—"मुझे विश्वास है, भैरव के इस नौकर को कालसर्प मार सकेगा। अगर वह न मार सका, तो हम दोनों को उससे खतरा है। अग्नि पक्षी ने देख लिया होगा कि भैरण्ड पक्षी मुझे

यहाँ ले आये हैं। इससे पहिले कि यह बात वह अपने मालिक से कहे, उसको मार देना अच्छा है।"

इस बीच, अग्नि पक्षी और कालसर्प एक दूसरे को मारने का पूरा प्रयत्न कर रहे थे। भयंकर युद्ध हो रहा था। अग्नि पक्षी अपनी चोंच से, तीनों सिरों को तोड़ने-मोड़ने का पूरा प्रयत्न कर रहा था। अग्नि पक्षी के नाखूनों से फिसलकर, उसकी पकड़ से छूटते ही, अपने दान्तों से अग्नि पक्षी के पेट को काटने की कालसर्प कोशिश कर रहा था। अग्नि पक्षी के शरीर से जो लपटें उठ रही थीं उसके कारण कालसर्प भुना-सा जा रहा था।

कालसर्प के मुख से जो विष-वायु निकल रही थी, उसके कारण अग्नि पक्षी की हालत बुरी हो रही थी।—वह थका माँदा था, आँखें बन्द करके, उससे भिड़ने का प्रयत्न कर रहा था।

"अगर इनका शोर, शंख के कानों में पड़ गया, तो हम दोनों पकड़े जायेंगे।" चन्द्रवर्मा ने कहा।

"ऐसा न होगा। शंख को विश्वास है, जब उसका नौकर अग्नि पक्षी पहरे पर होगा, तब उसको कोई खतरा नहीं है। इसी वजह से, वह अन्धेरा होते ही सो जाता है। फिर सूर्योदय से कुछ देर पहिले ही वह उठता है। उसकी आदतें मुझसे छुपी नहीं हैं।" कपालिनी ने कहा।

इतने में अग्नि पक्षी ने ज़ोर से चिल्लाना चाहा, पर आवाज़ न निकली। उसका गला ढीला हो लटक गया। अपने तीन सिरों से कालसर्प ने उसका गला घोंट दिया और जब उसने गला लटका दिया, तभी उसने अपनी पकड़ ढीली की। और एक तरफ़ झुक गया।

"जय कालसर्प, जय वीरसर्प," चिल्लाना चाहा, पर इतने में रुक गया और बहुत उत्साह के साथ चन्द्रवर्मा गुफ़ा के बाहर कूदा। कपालिनी में भी जाने कहाँ से ताकत आ गई, वह भी चन्द्रवर्मा के साथ बाहर निकली।

चन्द्रवर्मा और कपालिनी, जब उसके पास पहुँचे तो कालसर्प जमीन से चिपका पड़ा था। उन दोनों को पास खड़ा देख, गौरवार्थ उसने अपने सिर ऊँचे किये।

चन्द्रवर्मा ने, कालसर्प के पास जाकर प्रेम से उसका शरीर सहलाया। अग्नि पक्षी की लपटों के कारण कालसर्प का शरीर कहीं कहीं जल गया था—कहीं कहीं चमड़ा उखड़ गया था। अपने सेवक की बुरी हालत देख, प्रेम से उसके सिरों को छूकर कपालिनी ने कहा—"कालसर्प, आज से तुम्हारे कष्ट समाप्त हो गये हैं। ज्योंहि पूजागृह से अपूर्व शक्तिवाला शंख हमारे हाथ आ जायेगा, त्योंहि तुम्हें मानव-रूप दे दूँगी। उसके बाद, तुम जहाँ चाहो वहाँ चले जा सकते हो।"

शंख के पूजागृह का नाम सुनते ही, चन्द्रवर्मा चौकन्ना हो गया। उसने पूर्व

की ओर नजर दौड़ाई।—"कपालिनी, लगता है, सूर्योदय में काफ़ी देरी नहीं है। मैं अब जाकर, उस मान्त्रिक के पूजागृह के बारे में पता लगाता हूँ।"

कपालिनी ने भी थोड़ी देर पूर्व दिशा की ओर देखा—"तुम्हारा इस समय उसके पूजागृह में जाना ठीक नहीं है। उसका खातमा करने के लिए मैंने एक और उपाय सोचा है।" कपालिनी ने कहा।

"क्या है वह!" चन्द्रवर्मा ने पूछा।

"शंख हर रोज, सूर्योदय के समय, पूर्व दिशावाले पहाड़ के किनारे आकर, वहाँ एक पत्थर पर खड़े होकर, चारों तरफ़ घूमता मन्त्रोच्चारण करता है। वह पत्थर एक फुट बड़ा एक फुट ऊँचा है। उस पत्थर के उस तरफ़ हज़ार गज की सीधी ढलान है। खड्ड है। अगर जो कुछ मैं कहूँ तुम कर सके तो शंख को उस पत्थर से, उस खड्ड में यदि धकेल दिया गया, तो उसका शरीर टुकड़े-टुकड़े हो सकता है।" कपालिनी ने कहा।

"क्या है वह!" चन्द्रवर्मा ने उत्साहपूर्वक पूछा।

"वह क्या है, बताती हूँ। ज़रा पास आओ।" चन्द्रवर्मा के पास आते ही, कपालिनी ने उसके कान में कुछ कहा—"मालूम है, इस काम को बहुत छुपकर करना है। किसी को कुछ न पता हो। कहीं गल्ती हुई तो सर्वनाश हो जायेगा।"

चन्द्रवर्मा, खड़ा खड़ा कुछ देर सोचता रहा। फिर वह पासवाले एक ऊँचे पेड़ पर चढ़ गया। पूर्व दिशा की ओर थोड़ी देर देखकर, नीचे उतरकर, उसने कपालिनी से कहा—"कपालिनी! सूर्योदय में अभी अधिक समय नहीं है। मैं अपने काम पर जाता हूँ। तुम और काल सर्प, गुफ़ा में

आराम करो।" म्यान में से तलवार निकालकर पेड़ों के झुरमुट में चला गया। देखते देखते चन्द्रवर्मा ने पेड़ों से लटकती जड़ों को काटा, उन जड़ों को एक जगह इकट्ठा करके एक लम्बी रस्सी तैयार की। उस रस्सी के एक सिरे को कन्धे पर डाल जल्दी जल्दी पहाड़ पर चढ़ गया। पूर्व के पहाड़ के किनारे पड़े एक फुट के पत्थर के चारों ओर रस्सी बाँध दी। मान्त्रिक शंख, रोज सूर्योदय से पहिले उसी पत्थर पर खड़े होकर, चारों तरफ़ घूमकर मन्त्रोच्चारण किया करता था।

काम खतम होते ही, चन्द्रवर्मा पहाड़ से उतरकर, उस गुफ़ा के पास आया, जहाँ कपालिनी थी। उसको गुफ़ा के सामने खड़ा देख कपालिनी ने बाहर आकर पूछा—"क्या काम सफलतापूर्वक हो गया है?"

"अभी सफलता के बारे में कैसे कह सकता हूँ! रस्सी के एक सिरे को, उस पत्थर से बाँध आया हूँ। दूसरा सिरा पहाड़ के नीचे है, पर मुझे एक सन्देह सता रहा है, यदि उस पत्थर को पूर्व दिशा की ओर खीचेंगे, तभी ही तो शंख, खड्ड में गिरकर टुकड़े टुकड़े हो जायेगा।" चन्द्रवर्मा ने पूछा।

"तो तुम्हारा सन्देह यह है!" कपालिनी ने मुस्कराते हुए कहा—"खैर, शंख के उस पत्थर पर चढ़ते ही जिस रस्सी के सिरे को खींचना है, वह सिरा कहाँ है, मुझे बताओ। तुम्हारे सन्देह सब दूर कर दूँगी।

कपालिनी चन्द्रवर्मा के साथ पहाड़ के पास गई। वहाँ उसने रस्सी का सिरा दिखाया। कपालिनी ने उसको छुआ, फिर पूरब की ओर पहाड़ के किनारे को

देखकर कहा—"वर्मा, क्योंकि वह पत्थर, जिस पर खड़े होकर शंख मन्त्रोच्चारण करता है, पहाड़ के बिल्कुल किनारे पर है, अगर उसे किसी तरफ़ भी हिलाया गया तो वह नीचे खड्ड में जा गिरेगा। इस बारे में कोई सन्देह करने की जरूरत नहीं है।" कहते कहते उसने आँखें बड़ी की चन्द्रवर्मा की ओर सिर झुकाकर कहा—"देखो, वह है शंख, हाथ में चमचमाता जादू का डंडा दिखाई दे रहा है न! उसके पत्थर पर चढ़ते ही तुम जोर से रस्सी खींचो।" उसने दबी आवाज में यह कहा।

चन्द्रवर्मा ने पहाड़ के ऊपर देखा। सवेरे के मन्द मन्द प्रकाश में उसको मान्त्रिक शंख का विकृत रूप दिखाई दिया। एक क्षण चन्द्रवर्मा काँप गया, फिर सम्भलकर दोनों हाथों से, जोर से रस्सी पकड़ ली। इतने में शंख ने पहाड़ के किनारे के पत्थर के पास आकर, उस पर खड़े होकर, जादू के डंडे को उदय होते सूर्य की ओर उठाया।

"वर्मा, यही समय है। रस्सी को एक बार खींचकर तुरत ढीला कर दो।" कपालिनी ने कहा।

चन्द्रवर्मा ने जोर से एक बार रस्सी खींची, फिर उसे छोड़ दिया। उस समय शंख हाथ ऊपर उठाकर हिलाने लगा, पैरों से हवा मथने-सा लगा! जोर से चिल्लाया—"दगा, धोखा।" उसके हाथ का जादू का डंडा चमका, पूजा गृह के पास पहुँचा। पूजा गृह में भयंकर विस्फोट-सा हुआ, जोर से आवाज करता झील में जा गिरा। और शंख नीचे खड्ड में पत्थरों पर औंधे मुँह जा गिरा।

(अभी है)

विक्रमार्क ने हठ न छोड़ा। वह फिर पेड़ के पास गया। शव को उतार, कन्धे पर डाल श्मशान की ओर चुपचाप चल पड़ा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा—"राजा! तेरा हठ विचित्र है। बहुत हठी परिश्रमी लोग भी जब हार जाते हैं तो पछताते हैं। यह दिखाने के लिए तुम्हें प्रतापवर्मा की कहानी सुनाता हूँ। सुनो।" उसने तब यह कहानी सुनाई:—

किसी जमाने में, उदयगिरि प्रान्त में एक राजवंश से सम्बन्धित युवक रहा करता था। उसका नाम प्रतापवर्मा था। उन दिनों उदयगिरि सम्पन्न प्रदेश न था। सब जगह पहाड़ ही पहाड़ थे। इसलिए काफ़ी खेतीबाड़ी न होती। पहाड़ों के लोग बहुत गरीब थे। पर बहुत साहसी

बेताल कथाएँ

थे। धार्मिक भी। इनके साथ कुछ धनी लोग भी थे।

प्रतापवर्मा का पिता खानदानी आदमी था। प्रताप उसका दूसरा लड़का था। उसका बड़ा लड़का दो तीन वर्ष के लिए देश का पर्यटन करने के लिए गया हुआ था। उसके पाँच वर्ष की, हेमा नाम की लड़की थी।

प्रताप के पिता के घर बहुत-से गुलाम रहा करते थे। वे सब किसी पहाड़ी जाति के थे। उन गुलामों में से, एक स्त्री से प्रताप को प्रेम हो गया। प्रताप ने उस स्त्री से विवाह करने के लिए पिता की अनुमति माँगी। पिता यह जानकर आगबबूला हो गया—"मैं हरगिज़ न मानूंगा कि तुम एक पहाड़ी जाति की लड़की से शादी करके, उसको मेरी बहू बनाओ। अगर तुमने ऐसा वाहियात काम किया, तो मैं कुल से बहिष्कार करा दूँगा।"

इस बात पर वह पिता से झगड़कर घर से चला गया। और अपनी प्रेयसी के साथ विवाह करके, वह पहाड़ों में रहने लगा।

"यह आज से मेरा लड़का नहीं है। यदि यहाँ वापिस आये, तो इसे मरा ही समझना।" प्रताप के पिता ने अपने नौकरों से कहा।

पहाड़ी जाति की स्त्री से शादी करके, प्रताप को किसी प्रकार का सुख न मिला। वह रईसी ठाठ-बाट से पाला गया था, इसलिए पहाड़ी जातिवालों की तरह जीना उसके लिए बहुत कठिन हो गया। वह स्त्री चूँकि अब अपनी जाति के लोगों में रह रही थी, इसलिए वह प्रताप के मान-मार्यादाओं और तौर-तरीकों का तिरस्कार-सा करने लगी। इस ज़िन्दगी से बचने के लिए प्रताप सेना में भरती हो गया।

उदयगिरि पर पास के एक राजा ने हमला किया। युद्ध हुआ। उदयगिरि की सेना के साथ पहाड़ी जाति के लोग भी लड़े। परन्तु उदयगिरि की हार हुई। उदयगिरि के सब सम्पन्न लोग हार मानकर नये राजा के सामने झुक गये। परन्तु पहाड़ी जातिवालों ने हार मानना स्वीकार न किया। उन्होंने अपनी स्वतन्त्रता घोषित कर दी और जो सेना उनके इलाके में भेजी जाती वे उसका मुकाबला करने लगे। अब सिवाय लूट मार के, उनके सामने जिन्दगी बसर करने का और कोई रास्ता न था।

प्रताप युद्ध में उदयगिरि की सेना के साथ लड़ा। उदयगिरि जब हार गया और जब उसने शत्रु से सन्धि करली, तो उसने अपने पिता के पास जाकर कहा—"पिताजी, मुझे क्षमा कीजिये, जो कुछ मैंने किया, मैं उसके लिए पछता रहा हूँ। मुझे आप फिर अपने पुत्र के रूप में स्वीकार कीजिये।"

परन्तु पिता ने कहा—"तू मेरा लड़का नहीं है। मेरे घर में तेरे लिए स्थान नहीं है। तू जिस काम पर आया था, अगर वह हो गया हो तो तू वापिस जा सकता है। मुझे तुझ से कोई बातचीत नहीं करनी है।

किसी में यह हिम्मत न थी कि उसकी बात का विरोध करे। पाँच वर्ष की लड़की हेमा ने प्रताप से लिपटकर कहा—"चाचाजी। आप मत जाओ। यहीं रहो।"

"बेटी, बाबा मुझे जाने के लिए कह रहे हैं, मैं यहां कैसे रह सकता हूँ!" प्रताप ने पूछा।

हेमा अपने बाबा के पास जाकर रोई। उससे कहा कि वे चाचा को न जाने दें। परन्तु बूढ़ा अपनी जिद पर अड़ा रहा।

प्रताप फिर पहाड़ों में चला गया, पहाड़ी जातिवालों ने उसका खूब आदर-सत्कार किया और कहा कि वे उसको सरदार बनाना चाहते थे। प्रताप ने उनका सरदार होना स्वीकार कर लिया। इसके बाद पहाड़ी जाति का बल दस गुना अधिक हो गया। इसका कारण यह था कि प्रताप युद्ध शास्त्र जानता था। यह वे पहाड़ी लोग नहीं जानते थे। यही नहीं, औरों की अपेक्षा पहाड़ी जाति के लोगों में, धैर्य, साहस, सच्चरित्र और नियन्त्रण अधिक थे। अगर सरदार के लिए जान न्योछावर करनी पड़ जाये तो वे खुशी खुशी करेंगे। सरदार द्वारा निश्चित नियमों का प्राणों के जाने पर भी वे उलंघन न करेंगे।

"मैं तुम्हारे लिए अपना जीवन अर्पित कर दूँगा। पर यह जान लो कि भविष्य तुम्हारे साथ नहीं है। हम अगर धनियों को न लूटेंगे, तो हम न जी पायेंगे। इसलिये वे हमारा इस तरह शिकार करेंगे, जैसे हम कोई जंगली जानवर हों। अगर हम इन पहाड़ों को पार करके गये तो हम बेकार हो जायेंगे। बाकी दुनियाँ उनके साथ रहेगी।

अगर हम अभी झुक गये, तो गुलामों की जिन्दगी ही सही, कम से कम जीते तो रहेंगे। परन्तु यदि हमने स्वतन्त्रता के लिए युद्ध शुरू किया तो हमारा सर्वनाश होकर रहेगा। इसलिये यह निश्चय कर लो कि स्वतन्त्रता के लिए मरना चाहते हो या गुलामों की तरह जीना चाहते हो।" प्रताप ने उनको आगाह किया।

पहाड़ी जातिवालों ने लड़ने का निश्चय किया। आखिर प्रताप ने शपथ की, वह युद्ध में उनका अग्रणी रहेगा।

उसके बाद, जब लोग पहाड़ी डाकुओं का नाम सुनते तो डर से काँप उठते। वे कहाँ छुपे हुए हैं....कब कहाँ आकर धावा बोलेंगे, किसी को न मालूम था। कितने ही डाके लगाये गये, पर डाकू कभी न दिखाई दिये। उन पहाड़ों में से जाने के लिए उदयगिरि के लोग डरा करते।

उदयगिरि पर आक्रमण करनेवाली सेना में विजयवर्मा नाम का एक योद्धा था। युद्ध के समाप्त होने के कुछ समय बाद, वह अपने देश के लिए वापिस रवाना हुआ। उसके साथ उसका एक नौकर था। लोगों ने उससे
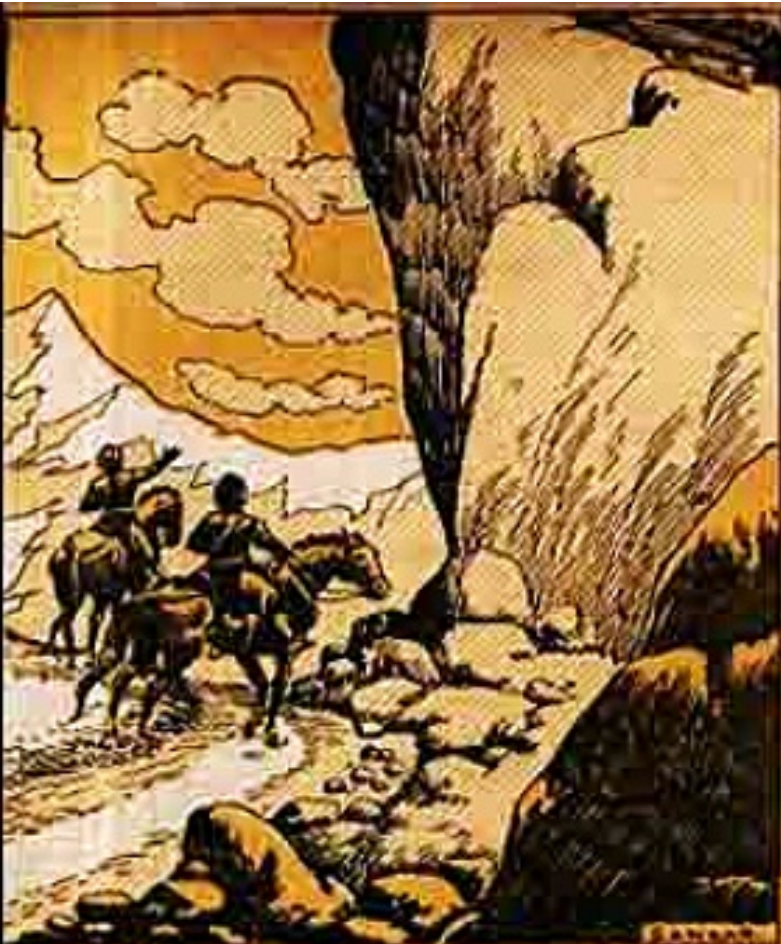
कहा कि वह पहाड़ी रास्ते से न जाये। उसको जाने का अलग रास्ता भी बताया।

विजय, निशानियाँ देखता देखता पहाड़ी रास्ते पर चला। कुछ दूर जाने के बाद वह भटक गया। सूर्यास्त से पहिले उसे एक ग्राम पहुँचना था। पर वह ग्राम न आया। अन्धेरा तो था ही, कोहरा भी छा गया। विजय ने अपने नौकर से कहा—"कहीं कोई झोंपड़ा दिखाई दिया तो वहीं पड़ाव करेंगे। कहीं कोई टिमटिमाती रोशनी दिखाई पड़ जाये....तुम भी चौकन्ने होकर देखते रहो।"

अन्धेरा होने के बाद भी वे चलते रहे। कहीं उनको कोई न दिखाई दिया। आखिर नौकर ने पूछा—"क्यों मालिक! वहाँ कोई चिराग दिखाई दे रहा है न!" कोहरे में से उनको कुछ अस्पष्ट प्रकाश दिखाई दे रहा था। यह सोचकर कि वहाँ कोई न कोई आदमी होगा....वे जल्दी जल्दी उस रोशनी की ओर चले। वे चलते चलते एक पहाड़ की तलहटी में पहुँचे।

वह पहाड़ बड़ा विचित्र था। उसका एक किनारा बिल्कुल दीवार की तरह था। उसी तरफ़ एक गुफ़ा-सी थी। उस गुफ़ा में से रोशनी आ रही थी। दीवार-सी, उस चढ़ाई को पार कर, उस गुफ़ा तक पहुँचना मनुष्य के लिए सम्भव न था।

फिर भी उस गुफ़ा में आदमी ज़रूर होंगे....अगर वे डाकू भी हों तो उनसे पनाह माँगनी ही होगी। इसलिए विजय ज़ोर से चिल्लाया।

उस गुफ़ा में पहाड़ी डाकू ही थे। वह बहुत बड़ी गुफ़ा थी। उसमें कई आदमियों के रहने की जगह तो थी ही, कई महीनों के लिए रसद रखने की भी थी। प्रताप भी उसी गुफ़ा में रहा करता था।

विजय की आवाज़ सुनकर पहाड़ियों ने गुफ़ा में से झाँककर देखा। उन्होंने रस्सी की एक सीढ़ी नीचे उतारी...."अपने घोड़ों को नीचे छोड़कर, सीढ़ी चढ़कर आओ। तुम्हारे घोड़ों का कोई कुछ नहीं बिगाड़ेगा।"

उसे विश्वास न था कि वह फिर अपना घोड़ा देख सकेगा, या वह उस गुफ़ा से जीवित आ सकेगा। फिर भी हिम्मत करके नौकर के साथ सीढ़ी चढ़कर गुफ़ा में आ गया।

गुफ़ा में उनको भोजन दिया गया। उनसे किसी ने कुछ नहीं पूछा। सवेरे प्रताप ने आकर विजय से पूछा—"तुम्हारे जाने का समय हो गया है। तुम्हारे घोड़ों को भी दाना-पानी दे दिया गया है। अगर चाहो तो मैं तुम्हारे साथ थोड़ी दूर चलकर तुम्हें रास्ता दिखाऊँगा।"

"कल रात जो आपने हमारा आतिथ्य किया, हम उसे कभी न भूल पायेंगे।—" कहते हुये विजय ने अपनी कृतज्ञता प्रकट की। फिर वह और उसका नौकर, पहाड़ पर से उतर आये। घोड़ों पर सवार हो चले गये। प्रताप उनके साथ एक कोस तक गया और उनको उनका रास्ता उसने दिखाया।

विजय ने उससे पूछा—"आप कौन हैं? इस गुफ़ा में क्यों रहते हैं?" यहाँ आपको क्या सब सुविधायें हैं?

"हम पहाड़ी डाकू हैं। हमारे बारे में आपने बहुत-सी बातें सुनी होंगी। उन में बहुत-सी झूटी हैं" यह आपको अब मालूम ही होगया होगा। मैं इनका सरदार हूँ। पर मैं पहाड़ी जाति का नहीं हूँ। मैं होने को तो राजवंश का हूँ—पर परिस्थितिवश मैं इनका सरदार बना।

फिलहाल तो जिन्दगी आराम से कट रही है। पर मैं जानता हूँ कि बहुत दिनों तक इस तरह की जिन्दगी नहीं चल सकती। जब हमारे आखिरी दिन पास आ जायेंगे, तब मैं आपके पास खबर भेजूँगा। तब आप मुझे देखने आइये। मैं अपनी इस इच्छा के लिये क्षमा चाहता हूँ।" प्रताप ने कहा। कुछ वर्ष बीत गये। राजा ने घोषणा की कि कुछ भी हो, डाकुओं का सर्वनाश करना होगा। राजा ने कुछ सेना को उदयगिरि के पहाड़ों में भेजा। उस सेना के साथ विजय भी था।

सेना घायल हो रही थी, फिर भी डाकू घेरे आ रहे थे। भयंकर अन्तिम लड़ाई में प्रताप घायल हुआ और पकड़ लिया गया। कई पहाड़ियों ने, स्वतन्त्रता के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी। कुछ जीते जी पकड़े गये।

यह जानकर, युद्ध में पकड़े गये किसी कैदी ने उसके लिए खबर भिजवाई है, विजय उससे मिलने गया। पहिले तो विजय, प्रताप को न पहिचान सका। बारह वर्षों में प्रताप बहुत बदल गया था। यही नहीं, विजय को यह भी विश्वास न था कि

इतने समय तक प्रताप डाकुओं का सरदार बना रहेगा। उसका ख्याल था कि वह कभी का, उन्हें छोड़कर चला गया होगा।

प्रताप ने इस बार विजय को अपनी असली कहानी सुनाई—"मैं निश्चित रूप से मरने जा रहा हूँ। मेरे पिता के घर, सिवाय हेमा के मेरे लिये कोई रोनेवाला नहीं है। मेरा जीवन सफल हो गया है। मुझे किसी से भी, पिताजी से भी नहीं, कोई ईर्ष्या द्वेष नहीं है। मैं खुशी खुशी मर रहा हूँ। मेरे लिये कोई दुखी न होवे।"

कहकर उसने अपनी अंगुली की अंगूठी उतारकर विजय को दी।

विजय ने उस अंगूठी को ले जाकर हेमा को दी। फिर हेमा ने विजय के साथ विवाह किया। वे दोनों प्राय: प्रताप के बारे में बातचीत करते और खुश होते।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा—"राजा, प्रतापवर्मा का स्वभाव कैसा था! वह एक पहाड़ी जाति की लड़की के लिये क्यों अपनी जाति से अलग हो गया! अलग हो जाने के बाद, फिर जाकर पिता

से क्यों माफी माँगी? क्योंकि उसको स्त्री से सुख न मिला था, इसलिये क्या वह अपने किये पर पछता रहा था? अगर पछता रहा था तो वह फिर पहाड़ी जाति वालों के पास क्यों गया? क्यों उनका सरदार बना? क्या इस गुस्से में कि पिता ने उसको क्षमा नहीं किया था? अगर यह बात थी तो उसने मरते समय यह क्यों कहा कि उसे किसी पर कोई गुस्सा न था? इन प्रश्नों का तुमने जान बूझकर उत्तर न दिया तो तुम्हारा सिर फूट जायेगा।

विक्रमार्क ने कहा—"प्रताप अपने किसी भी काम के लिए नहीं पछताया। उसका स्वभाव ही कर्तव्य के लिए कुर्बान होनेवाला स्वभाव था। जिससे प्रेम किया था, उसके साथ विवाह करना उसने अपना कर्तव्य समझा। शत्रुओं से अपने देश की रक्षा करना अपना कर्तव्य समझकर, उसने युद्ध में भाग लिया। युद्ध में हारने के बाद, उसने सोचा कि पिता से माफी माँगना उसका कर्तव्य था, इसलिये उसने जाकर माफी माँगी। जब उससे कुछ न हुआ—तो उसने सोचा कि स्वतन्त्रता के लिए लड़नेवाले पहाड़ियों की मदद करना उसका कर्तव्य था, इसलिये उसने उनका नेतृत्व किया। जीवन में उसने सुख और आनन्द की आशा न की—इसलिये न उसको उस पत्नी पर ही गुस्सा था, जो उसको सुख न दे सकी, न उस पिता पर ही जो उसे क्षमा न कर सका था, कोई क्रोध था। जो उसने अपना कर्तव्य समझा उसके लिए उसने अपने प्राण छोड़ दिये, इसीलिये उसने अपना जीवन सफल समझा।

राजा का इस प्रकार मौन भंग होते ही, बेताल शव के साथ अदृश्य हो गया और पेड़ पर जा बैठा। [कल्पित]

आपने काले जूते ही पहिने हैं।
चाहें तो आईने में देख लीजिये।

हँसो मत। अगर वह पेट नहीं होता,
तो नीचे जा गिरता।

इतने छोटे दरवाजेवाला घर भी क्या है!
पिताजी, आप बराण्डे में रह लेना।

काले कुड़ते वाला इस तरफ़ आया था।
कहाँ चला गया वह!

अपरीक्षित कारकम्

चौथा चला तभी आगे औ'
चलता गया बहुत ही दूर,
सिद्धिमार्ग को गया भूल वह
जा निकला उससे भी दूर।

भूख-प्यास से व्याकुल होकर
भटक रहा था जब वह क्लान्त,
देखा उसने एक पुरुष को
लहू लुहान बना था गात।

उसके सिर पर एक चक्र था
घूम रहा प्रति पल अविराम,
बड़े कष्ट में था बेचारा
कह उठता रह रह 'हे राम'!

चौथे ने उससे जा पूछा—
"कहो, हुआ क्यों ऐसा हाल?
क्यों सिर पर यह चक्र तुम्हारे
घूम रहा है अति विकराल।"

इतना कहते ही आ बैठा
उसके ही सिर पर वह चक्र,
घबड़ा उसने कहा पुरुष से—
"यह क्या हुआ अचानक भद्र?"

कहा पुरुष ने—"इसी तरह ही
आ बैठा था मुझपर चक्र,
सिद्धिवर्तिका लेकर मैं भी
आया था ऐसे ही भद्र।

क्यों मैंने सही यातना
मिला दुःख से अब है त्राण,
अब जब कोई फिर आएगा
तब होगा तेरा भी त्राण।

सिद्धिवर्तिका लेकर कोई
आता है जब भी इस ठौर,
यही दशा होती है उसकी
यही किया मैंने है गौर।"

"श्री भारतीभक्त"

इतना कहकर आज्ञा लेकर
किया तुरत उसने प्रस्थान,
खड़ा चक्रधर रहा वहीं पर
रोता बिलकुल दीन समान।

सुवर्णसिद्धि था बहुत देर तक
रहा देखता उसकी राह,
फिर निकला वह उसे खोजने
बहुत ढूँढता वन में राह।

आखिर पहुँचा, खड़ा जहाँ था
चक्रधर वह लहू लुहान,
सुवर्णसिद्धि देखकर उसको
हुआ बहुत ही तब हैरान।

पूछा उसने—"अरे बंधु, यह
कैसे हुआ तुम्हारा हाल?"
चक्रधर ने रो रोकर
उसे सुनाया सब तत्काल।

सब सुन कहा सुवर्णसिद्धि ने
अरे, न मानी तुमने बात,
समझाया मैंने था तुमको
पर हठी बहुत निकले तुम तात!

विद्या से है बड़ी बुद्धि ही
यह करना था तुम्हें विचार,
कुफल भोगना ही पड़ता है
रहें न यदि पग-पग हुशियार।

किसी शहर में ब्राह्मण भाई
रहा कभी करते थे चार,
चारों में था मेल बहुत ही
था उनका न्यारा संसार।

अपढ़ एक तो था उनमें औ'
शास्त्रों के ज्ञाता थे तीन,
अपढ़ किंतु था चतुर बहुत ही
बुद्धि शेष की थी अति हीन।

एक बार चारों ने मिलकर
आपस में की यही सलाह,
चलें कमाने धन सब मिलकर
पकड़ें हम पूरब की राह।

कहा बड़े ने उसी समय यह—
"चौथा तो है विद्या हीन,
नहीं जरूरत इसकी कुछ भी
चलें अभी केवल हम तीन।"

किंतु तीसरा बोला तत्क्षण—
"नहीं, नहीं, यह ठीक नहीं,
हम चारों बचपन के साथी
इसे छोड़ना उचित नहीं।

'तेरा मेरा' में पड़ते वे
जिनके होते निम्न विचार,
कुटुम्ब समझते वसुधा को
जिनका होता चरित उदार।"

आखिर साथ चले चारों ही
मिला उन्हें जंगल घनघोर,
जहाँ सिंह की पड़ी हड्डियाँ
देख एक कर बैठा शोर—

हम अपनी विद्या का इसपर
अभी आजमाएँगे जोर,
जिला इसे देंगे हम इसकी
सभी हड्डियों को अब जोड़।"

उत्सुक होकर तीनों ने ही
दिया सिंह को झट आकार,
और हुए उद्यत करने को
उसमें प्राणों का संचार।

तब चौथा झट बोल उठा यह—
"क्यों झंझट यह सब बेकार,
जीवित होते ही हमको यह
सिंह तुरत ही देगा मार।"

किंतु नहीं तीनों ने माना
मँडराता था उनपर काल,
लेकिन चौथा एक पेड़ पर
जा बैठा झट पट तत्काल।

फिर तो सिंह हुआ जीवित जब
दिया तुरत तीनों को मार,
और गया घर सही सलामत
वह चौथा जो था हुशियार।

इसी तरह थे एक नगर में
चार बड़े ही पंडित मित्र,
विद्या से धन प्रचुर कमाने
चले साथ ही चारों मित्र।

चलते चलते मिला कहीं पर
उन्हें दुराह आगे एक,
दो राहों में पकड़ें किसको—
यही सोचकर बोला एक—

"लिखा शास्त्र में वही राह शुभ
चलें महाजन सब जिस राह,
यह देखो, अर्थी जाती है,
चलो, चलें हम भी उस राह।"

आगे चलकर एक गधे पर
पड़ी अचानक जमी निगाह,
कहा एक ने पुलकित होकर—
"हाँ, मिला मित्र भी हमको वह!

उत्सव, युद्ध, अकाल, दुःख में
या मसान और राजद्वार,
तक जो देता साथ वही तो
होता जग में असली यार।

यों कह चारों ने गदहे को
लिया गले से लगा तुरन्त,
देख उसी क्षण एक ऊँट को
बाँध उसीसे दिया तुरन्त।

इसी तरह दे शास्त्र-दुहाई
लगे नदी को करने पार,
बचे डूबने से तीन किंतु
दिया एक का शीश उतार।

एक जगह फिर खाने बैठे
शास्त्र वहाँ भी आड़े आया,
भूखे ही फिर उठे वहाँ से
सबने बड़ा मजाक उड़ाया।

शास्त्रों का ज्ञाता होकर भी
जो न जानता लोकाचार,
विषय हँसी का बनता ही है
उस मूरख का हर व्यवहार।

खराब स्वभाव

एक बिच्छू को एक नाला पार करना पड़ा। उसने एक कछुवे से कहा—"भाई, जरा मुझे उस पार लगा दो।

"मैं तुझे अपनी पीठ पर चढ़ाकर पार तो करा दूँ, पर यदि तूने मुझे काटा तो मैं वहीं डूब जाऊँगा।" कछुवे ने कहा।

"क्या मैं इतना नहीं जानता हूँ! अगर तुम डूब गये तो क्या मैं नहीं डूबूँगा?" बिच्छू ने कहा। यह बात कछुवे को अच्छी लगी। वह बिच्छू को चढ़ाकर नाला पार करने लगा।

इस बीच, बिच्छू ने कछुवे को काट ही दिया। कछुवे ने डूबते हुये कहा—"तुम तो कहते थे कि तुम सब जानते थे। मुझे काटा है। क्या हम दोनों नहीं डूबेंगे?"

"हाँ, कहा था, मेरे ज्ञान में कोई कमी नहीं है। मेरा स्वभाव बड़ा खराब है! उसको बदल न सका, इसलिए काट बैठा! क्या करूँ?" बिच्छू ने कहा।

राजद्रोह
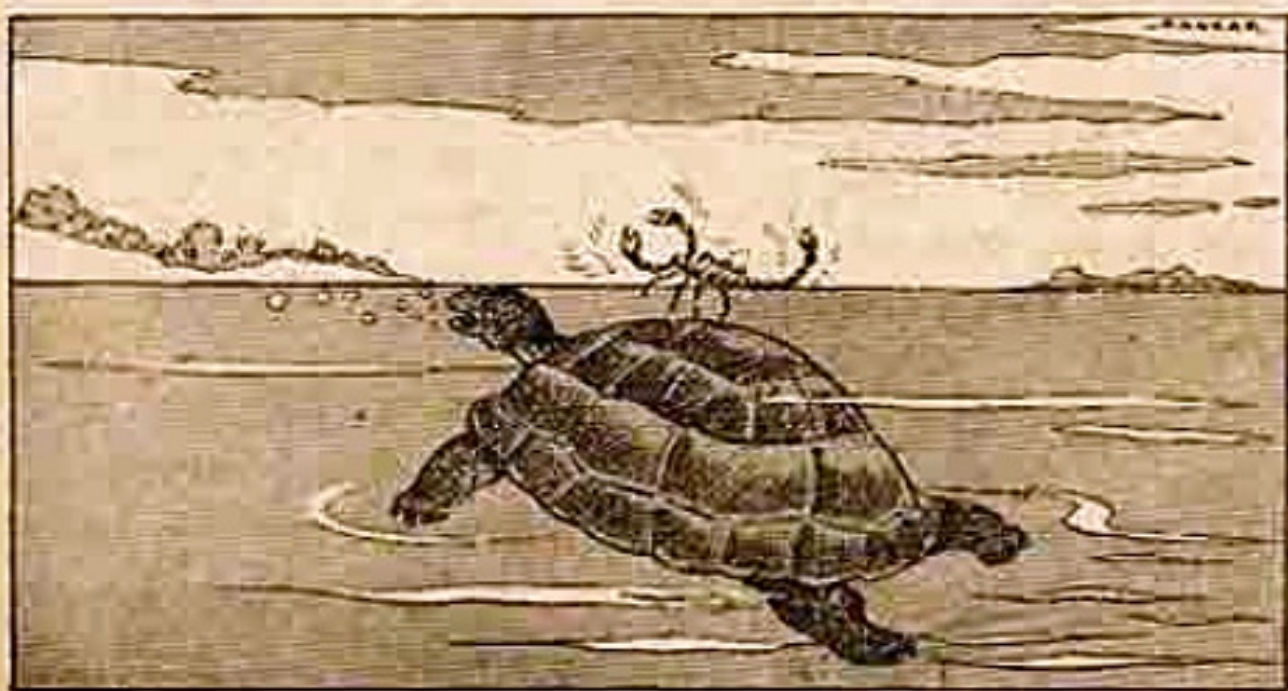
कभी डन्कन नाम का राजा स्कोटलेन्ड पर राज्य किया करता था। उसके सामन्तों में एक मेकबेथ था, जो ग्लामिस का स्वामी था। वह राजा का तो निकट बन्धु था ही, अनेक युद्धों में धैर्य, साहस दिखाकर उसने राजा का आदर-अभिमान भी पा रखा था।

राजा के सामन्तों में एक और सामन्त था, जो काडर का स्वामी था। वह ऊपर ऊपर से तो राजभक्ति दिखाता पर अन्दर ही अन्दर वह राजा के विरुद्ध षड्यन्त्र कर रहा था। उसके षड्यन्त्र के परिणाम स्वरूप नोरवे से एक बड़ी सेना स्कोटलेन्ड पर हमला करने आई।

उस सेना का मुकाबला करने के लिए मेकबेथ अपनी सेना लेकर निकला। उसके साथ बान्को नाम का सेनापति भी था। नोरवे की और स्कोटलेन्ड की सेना में भयंकर युद्ध हुआ। आखिर मेकबेथ के पराक्रम के कारण शत्रुओं की सेना तितर बितर हो गई।

इस बीच काडर सामन्त के षड्यन्त्र का भी पता लगा लिया गया। अपना अपराध स्वीकार करने पर उसको फाँसी पर चढ़ा दिया गया। तभी खबर मिली कि मेकबेथ मैदान मारकर आ रहा था। राजा बड़ा खुश हुआ, उसने घोषित किया कि मेकबेथ को काडर का स्वामी भी नियुक्त करेगा।

युद्ध-भूमि से, बान्को के साथ लौटते हुए मेकबेथ को यह बात न मालूम थी। वे कुछ झाडियाँ पार करके आये थे कि उनको यकायक सामने तीन बुढ़ियायें दिखाई दीं। उनमें से एक ने मेकबेथ से कहा—"ग्लामिस के सामन्त की जय।" दूसरे ने

विलियम शेक्सपियर

"काडर के सामन्त की जय।"—मेकबेथ को यह सम्बोधन समझ में नहीं आया। वह यह भी न जानता था कि काडर के सामन्त ने षड्यन्त्र किया था। तीसरी ने कहा—"होनेवाले राजा की जय।"

मेकबेथ इस बात पर बिल्कुल विश्वास न कर सका। राजा के दो नौजवान लड़के थे। राज्य के उत्तराधिकारी तो वे होंगे, मैं कैसे राजा होऊँगा। असम्भव।

जिन बुढ़ियाओं ने मेकबेथ का इस प्रकार स्वागत किया था, उन्होंने बान्का से भी कहा—"तुम मेकबेथ से कम हो फिर भी अधिक!" "उससे तुम अधिक भाग्यहीन हो, पर उससे अधिक भाग्यशाली भी।" तुम राजा तो न बनोगे, पर तुम्हारे वंशज बनेंगे।" बुढ़ियाओं ने कहा।

"तुम्हारी बातें मुझे बिल्कुल समझ में नहीं आ रही हैं। यह बात तो सच है कि मैं ग्लामिस का सामन्त हूँ। पर मैं काडर का सामन्त कैसे हो गया? मेरे हाथ राज्य कैसे आ सकेगा?" यह मेकबेथ पूछ ही रहा था कि वे तीनों बुढ़ियायें अदृश्य हो गईं। यह आश्चर्य देख दोनों सेनापति चकित हो गये।

इतने में सैनिकों ने आकर मेकबेथ का यों अभिवादन किया—"काडर के सामन्त की जय!" जो कुछ हुआ था, उसे जानते ही, मेकबेथ को बुढ़ियाओं की बात पर विश्वास हो गया। उसे लगा कि शायद उसका राजा बनना भी सच था। उसके दिल में राजद्रोह पनपने लगा। उसने अपनी पत्नी के पास एक पत्र में वह सब लिख भेजा, जो उन बुढ़ियाओं ने कहा था।

उसकी पत्नी वह पत्र पढ़कर बड़ी खुश हुई। बुढ़ियाओं के कथनानुसार मेकबेथ काडर का सामन्त हुआ था। अतः उनके कथनानुसार वह स्कोटलेन्ड का राजा भी बनेगा। बस, डन्कन की हत्या बाकी है। मेकबेथ की पत्नी ने सोचा, कुछ भी हो, वह हत्या जरूर होकर रहनी चाहिये।

मेकबेथ ने राजधानी आकर राजा का दर्शन किया। राजा ने उसकी प्रशंसा की। राजा अपने सामन्तों को देखने के लिए निकला। उसने एक दिन मेकबेथ के घर आराम करके अपनी यात्रा पर आगे जाने का निश्चय किया। उनके आतिथ्य की व्यवस्था करने के लिए मेकबेथ अपने घर पहिले गया।

डन्कन को मार कर स्वंय राजा बनने के लिए मेकबेथ के लिए यह अच्छा मौका था। इस बारे में पति पत्नी ने सलाह मशवरा किया। राजा होने की तो उसकी इच्छा प्रबल थी ही पर वह राजा की हत्या करने के लिए हिचका। राजा बड़ा अच्छा था। अच्छे स्वभाव का था। मेकबेथ को कितने ही अच्छे ढंग से देखता भालता था। किन्तु मेकबेथ की पत्नी ने आगा पीछा न देखा। वह चाहती थी कि हत्या हो और उसका पति राजा हो। इसके अतिरिक्त उसके मन में कोई और इच्छा न थी। उसने अपने पति को बहुत समझा बुझा कर हत्या के लिए मना लिया।

क्योंकि दिन भर सफर किया था, मेकबेथ के घर खाना खाकर राजा तुरन्त सो गया। उसके अंगरक्षक को मेकबेथ की पत्नी ने नशे की चीजें दीं। राजा के साथ वे भी नाक बजाने लगे।

ठीक आधी रात के समय मेकबेथ राजा के शयन कक्ष में गया। उसके अंगरक्षकों की तल्वार से ही उसने राजा की हत्या की। उनकी तल्वारें फिर उनके बगल में रखकर अपनी पत्नी के पास आकर कहा—"काम खतम कर दिया है।" उसकी अक्ल ठिकाने न थी। उसे इस बात की खुशी न थी कि उसने कोई बड़ा कार्य कर दिखाया था।

राजा ने अपने नौकरों को सवेरे उठाने के लिए कहा था। उन्होंने आकर दरवाजा खटखटाया। मेकबेथ और उसकी पत्नी ने, जैसे तभी सोकर उठे हों आकर किवाड़ खोले। शयनकक्ष में राजा के नौकरों को उसका शव मात्र ही दिखाई दिया। खून से लथपथ तल्वारें जिनकी बगल में पड़ी थीं, जैसे वे हत्या के लिए

जिम्मेवार हो, मेकबेथ ने उन दोनों को वहीं मार दिया।

इस शोर शराबे में राजा के अनुचर सब उठ गये। उन्हें मालूम होगया कि राजा की किसी ने हत्या कर दी थी। राजा के दोनों लड़कों ने आपस में कुछ सोच साच कर कहा—"किसी ने राज वंश का नाश करने का निश्चय करके पिता जी को स्वाहा कर दिया है। यह इतने से खतम होने वाला नहीं है।" यह सोच वे बिना किसी को कुछ कहे भाग गये। बड़ा लड़का, जो युवराजा था और जिसका नाम माल्कम था इन्गलेन्ड भाग गया और दूसरा आयरलेन्ड भाग गया।

उन दोनों का इस तरह भाग जाना मेकबेथ के लिए फायदेमन्द साबित हुआ। क्योंकि राजा के साथ जो सामन्त आये थे उनमें से किसी एक ने भी न सोचा कि अंगरक्षकों ने राजा की हत्या स्वयं सोच विचार कर की थी। यह विश्वास आसानी से कर लिया गया कि राजा के लड़कों ने उनको घूस देकर उनसे यह काम करवाया होगा। कहीं यह बात किसी को न मालूम हो जाये इसलिए वे भाग गए हैं। यही

नहीं राजा के बाद कौन राजा हो यह समस्या भी हल हो गई। राजकुमार फरार थे। सामन्तों में मेकबेथ से राजा का अधिक निकट सम्बधी कोई न था।

मेकबेथ स्कोटलेन्ड की गद्दी पर बैठा। उसकी पत्नी रानी बनी। बुढ़ियाओं की भविष्यवाणी पूर्ण हुई।

परन्तु मेकबेथ के कष्टों का कम होना तो अलग, वे बढ़ते गये। उसकी आत्मा तो उसे तंग कर ही रही थी। अब उसे सन्देह भी सताने लगे थे। बान्को उसकी बगल में कांटे के समान था। मेकबेथ को

सब निर्दोष समझ रहे थे। पर बान्को आसानी से सच बात का अनुमान कर सकता था—क्योंकि जब बुढ़ियाओं ने भविष्यवाणी की थी, तब वह उसकी बगल में था।

यही नहीं, मेकबेथ के मन को यह बात भी बींध रही थी—"क्या मैंने इतनी दारुण हत्या राज्य को बान्को के लड़कों को सौंपने के लिए की है!" मेकबेथ को लगा कि जब तक बान्को व उसके लड़के की हत्या नहीं करदी जाती, तबतक उसको शान्ति न मिल सकेगी। उसने दो तीन हत्यारों को बुलवाकर इस बारे में कहा। फिर उसने एक रात अपने घर दावत दी। उसमें सब सामन्तों को निमन्त्रित किया। बान्को और उसके लड़के को भी बुलाया।

उस दिन रात को बान्को अपने लड़के के साथ दावत के लिए आ रहा था कि मेकबेथ द्वारा नियुक्त हत्यारों ने बान्को को मार डाला। उसका लड़का भाग गया। इससे भी मेकबेथ को फायदा हुआ, क्योंकि मेकबेथ सामन्तों को यह विश्वास दिला सका कि उसके लड़के ने ही बान्को की हत्या करवाई थी। पर दावत अच्छी तरह

न हो सकी। मेकबेथ जब अपनी गद्दी पर बैठने गया, तब उसको उसपर बान्को की आकृति दिखाई दी। उस बान्को से, जो औरों को नहीं दिखाई दे रहा था मेकबेथ ने जोर से कहा—"भाई, मैंने तुम्हारा कुछ नहीं किया है। मुझे देखकर सिर मत हिलाओ।" सब ने चकित होकर पूछा—"क्या बात है महाराजा!"

"मेरे पति को कई बार इस तरह हो जाता है, आप प्रश्न करके उनको तंग न कीजिये। आप मेहरबानी करके इस समय चले जाइये। वे ठीक हो जायेंगे...." कहकर मेकबेथ की पत्नी ने सब को भेज दिया।

दो हत्याओं के बाद भी मेकबेथ को शान्ति न मिली। बान्को का लड़का तो बचकर भाग ही गया था। न मालूम उसके और शत्रु कौन हैं! इसलिए अपना भविष्य जानने के लिए मेकबेथ उस स्थान पर गया, जहाँ उसको बुढ़ियायें दिखाई दी थीं।

"मुझे कुछ सन्देह हो रहे हैं तुम्हें उनका निवारण करना होगा।" मेकबेथ ने उनसे कहा।

बुढ़ियाओं ने भूतों को बुलाया। एक भूत ने प्रत्यक्ष होकर कहा—"फैफ के सामन्त मेकडफ से सावधान रहना।"

एक और भूत ने कहा—"तुझे किसी स्त्री द्वारा पैदा किये गये मनुष्य से कोई खतरा नहीं है। इसलिए तुम आराम से रहो। जो तुम करना चाहो वह तुम मनमानी करो।"—तो इसका मतलब यह हुआ कि मेकडफ मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता। फिर भी उसे न छोड़ूँगा। उसको मरवा दूँगा।" मेकबेथ ने सोचा।

ये बातें सुनकर मेकबेथ को शान्ति हुई। उसने सोचा कि कोई उसे मार न सकेगा। कोई उसका कुछ न बिगाड़ सकेगा।" पर यह बताओ मेरे राज्य का परिपालन मेरे बाद क्या बान्को के वंशज करेंगे? उसने भूतों से पूछा। इस प्रश्न के उत्तर में उसे आठ राजाओं के रूप बगल में से जाते दिखाई दिये। उनके बाद बान्को की आत्मा आई। मेकबेथ जान गया कि जो आगे गये थे वे बान्को के वंशज ही थे।

घर पहुँचते ही मेकबेथ को एक खबर दी गई कि फेफ का सामन्त मेकडफ भाग कर मालकम से जा मिला था, जो इन्गलेन्ड में रह रहा था। मेकडफ मेकबेथ को हरा कर माल्कम को स्काटलेन्ड का राजा बनाने की कोशिश कर रहा था।

मेकबेथ ने यह खबर सुनने के बाद गुस्से में मेकडफ की पत्नी, लड़के और बन्धुओं को मरवा दिया। उसके हत्याकण्ड दिन प्रति दिन बढ़ते जाते थे। कई सामन्त यह न सह सके। वे भागकर उस सेना में जा मिले जो मेकडफ इकट्ठी कर रहा था। बाकी सामन्त होने को तो

मेकबेथ के साथ थे पर उनको उसके प्रति कोई आदर भाव न था। अब उसकी पत्नी ही उसकी एक मात्र विश्वासपात्र रह गई थी। उसने अपने पति को भरसक ढाढ़स दिया पर वह भी व्यथित, व्याकुल-सी थी। डन्कन की हत्या के लिए जो उसने किया था, वह भूल न पाई थी। आधी रात के समय वह सोती सोती उठती और चलने लगती। उसे लगता कि डन्कन का खून उसके हाथों में है। और बहुत धोने पर भी वह नहीं छूट रहा था। आखिर उसने आत्महत्या कर ली।

अब मेकबेथ से सहानुभूति करने वाला कोई न रह गया था। जब पता लगा कि उसका खातमा करने के लिए इन्गलेन्ड से सेना आ रही थी, उसमें मृत्यु का भी भय न रहा। क्योंकि उसने कई युद्ध किये थे। और युद्धों का अच्छा अनुभव था, इसलिए लड़ते लड़ते उसने प्राण छोड़ने चाहे। वह डन्सिनेन किले में जाकर मालकम, मेकडफ की सेना के आने की प्रतीक्षा करने लगा।

एक दिन एक नौकर ने आकर मेकबेथ से कहा—"महाराज! आश्चर्य है! क्या बताऊँ! बर्नाम जंगल हमारी तरफ

चला आ रहा है।" मेकबेथ को यह सुनकर आश्चर्य हुआ। यह असम्भव कैसे सम्भव हो सका, यह जानने के लिए वह बाहर आया।

हुआ यह था कि मेकबेथ को यह न पता लगे कि उसकी सेना कितनी बड़ी थी। मालकम ने अपनी सैनिकों से कहा—"तुम किसी पेड़ को काटकर, उनकी टहनियों को लेकर किले की ओर बढ़ो।" सैनिकों ने वैसा ही किया।

जब उसे मनुष्य न दिखाई दिया और जंगल आता दिखाई दिया, तो मेकबेथ को लगा कि भूतों का ज्योतिष ठीक निकल रहा था और उसके दिन पास आ गये थे।

थोड़ी देर बाद, मेकबेथ के थोड़े से आदमियों में, और मालकम की सेना में युद्ध हुआ। उस युद्ध में मेकड्फ़ मेकबेथ को खोजता खोजता आया और उसको देखकर, उसने उसे युद्ध के लिये ललकारा। मेकबेथ ने उससे युद्ध करने से इनकार कर दिया—"तुम मुझे न जीत सकोगे। मुझे वही मार सकता है, जिसे स्त्री ने जन्म न दिया हो। मैं तुम से युद्ध न करूँगा।" मेकबेथ ने कहा।

"मुझे किसी स्त्री ने जन्म नहीं दिया है। प्रसवकाल से पहिले ही मुझे माँ के गर्भ से जबर्दस्ती निकाला गया था। इसलिए मैं ही तेरे लिए मृत्यु दूत हूँ।" मेकड्फ़ ने कहा।

तब जाकर मेकबेथ की आँखें खुलीं। वह मेकड्फ़ से लड़ता लड़ता मारा गया।

कालक्रम से बान्को के वंश स्काटलेन्ड की गद्दी पर बैठे। उनमें से अन्तिम जेम्स छटा, स्काटलेन्ड के साथ इन्गलेन्ड का भी राजा बना तब से दोनों देश एक ही राजा के नीचे हैं।

अमूल्य सम्पत्ति

विक्रमसेन अमरावती नगर का राजा था। उसे अपने कर्मचारी पसन्द न थे—क्योंकि वे हमेशा उसकी यों खुशामद किया करते—"आप इन्द्र हैं, चन्द्र हैं, आपके राज्य में प्रजा बहुत सुखी सन्तुष्ट है।"

इसलिए विक्रमसेन कभी कभी वेष बदलकर मामूली आदमी की तरह गाँवों में छुपा रहता—और स्वयं पता लगाता कि लोग कैसे जी रहे थे।

एक दिन वेष बदलकर, विक्रमसेन वन में से जा रहा था तो उसको, किसी का बांसुरी बजाना सुनायी दिया—राजा उस तरफ गया, और उसने एक गड़रिया देखा। उसकी उम्र कोई सोलह साल की होगी। चीथड़े पहने हुए था, फिर भी खूबसूरत लगता था। उसको देखकर राजा ने सोचा, शायद वह भी कोई राजकुमार था, जिसने वेष बदल रखा था। परन्तु उसने गड़रिये से बातचीत करके मालूम किया कि उसके माता पिता बहुत गरीब थे।

उस गड़रिये का नाम शम्भु था। उसने राजा के प्रश्नों का ठीक जवाब दिया। उसे घुमा फिरा कर, झूटी झूटी, बढ़ी-चढ़ी, बातें करने की आदत न थी।

"शम्भु, मेरे साथ आओगे?" तुम्हें अच्छे कपड़े दूँगा....अच्छा भोजन दूँगा....और नौकरी भी दूँगा।" राजा ने कहा। शम्भु इसके लिए मान भी गया।

अमरावती नगर पहुँचकर, जब उसने राज महल में कदम रखा तो उसको मालूम हो गया कि उस देश का राजा ही उसको स्वयं वहाँ लाया था। उसे बड़ी खुशी हुई।

रामकृष्ण

शम्भु के चीथड़े उतार दिये गये और उसको कीमती पोषाक, जेवर-जवाहरातों से जड़ी पगड़ी दी गई। उसे पढ़ना-लिखना सिखाया गया....उसे यह भी बताया गया कि दरबार में कैसे बात की जाती है, कैसे रहा जाता है, बगैरह। कुछ समय बाद राजा ने उसको अपना खजांची बनाया। राजा ने सोचा कि उस खजाने के लिए जिस में करोड़ों रुपयों की कीमती चीजें थीं उससे अधिक उपयुक्त और विश्वासपात्र अधिकारी नहीं मिल सकता था।

इस काम पर जाने से पहिले शम्भु अपने गाँव गया—उन सब जगहों पर घूमा, जहाँ वह घूमा करता था। उसने बाँसुरी बजायी....उसने अपने लोगों को उपहार भी दिये। उसके लोगों ने जब पूछा—"राजा की नौकरी कैसी है?" तो उसने कहा—"तुम इस राज्य को छोड़ कर कहीं न जाना। राजा के दरबार में तो नौकरी करना ही मत। वास्तविक सुख तो यहीं है।"

फिर वह अमरावती वापिस गया और राजा के खजांची का काम करने लगा। कुछ दिनों बाद राजा मर गया। राजा का लड़का कनक गद्दी पर बैठा। राजा के कई कर्मचारियों की शम्भु से नहीं पटती थी—क्योंकि भूतपूर्व राजा, औरों की अपेक्षा, उसको अधिक आदर के साथ देखता था। अब उन कर्मचारियों ने नये राजा के कान भरने शुरु किये—"महाराज, इसने आपके पिताजी का विश्वास जैसे तैसे पा लिया और आपका खजाना लूट लिया। आप इस पर जरा नजर रखिये।"

राजा को अगर उसके कर्मचारी उसके कुशल-क्षेम का ख्याल करके कुछ कहें, तो

वह सुने बगैर कैसे रह सकता है! यह दिखाइये कि शम्भु ने अपराध किया है, धोखा दिया है, हम उसको अवश्य दण्ड देंगे।" कनकसेन ने कहा।

"आपके बाबा के पास रत्नों से जड़ी तलवार थी, उसे लाकर दिखाने के लिए कहिये।" उन कर्मचारियों ने राजा को सलाह दी।

राजा ने शम्भु को बुलाकर कहा—"बाबा की तलवार तुम्हारे पास है, उसे लाकर एक बार मुझे दिखाओ।"

"महाराज! आपके पिता ने, उसमें से रत्न निकलवाकर और गहने बनवाये थे।" शम्भु ने कहा।

यह भी साबित हो गया कि शम्भु ने जो कुछ कहा था वह ठीक था। इसके लिए कई गवाह भी मिल गये। राजा ने उन कर्मचारियों से कहा—"शम्भु निरपराधी माळूम होता है।"

"महाराज! खज़ाने में रखी सब चीज़ों की सूची बनाकर लाने के लिए कहिये। पुरानी सूची से उसे मिलाकर जाना जा सकता है कि कौन कौन-सी चीज़ें नहीं हैं।" कर्मचारियों ने कहा।

राजा की आज्ञा के अनुसार, खज़ाने में जितनी चीज़ें थीं, उन सब की सूची बनाकर शम्भु लाया। उस सूची को देखने से पता लगा कि कोई वस्तु न गई थी। उसकी सूची में लिखी वस्तुओं का निरीक्षण करने के लिए राजा, स्वयं अपने परिवार के साथ आया।

खजाना को देखकर राजा बहुत आनन्दित हुआ। खज़ाने में सब चीज़ें बड़े अच्छे ढंग से, सजाकर रखी गई थीं। सूची के अनुसार उनको देख लेना बहुत आसान था।

राजा, जाने के पहिले शम्भु की प्रशंसा करने ही वाला था कि उनके साथ आये हुये एक कर्मचारी ने खज़ाने के दीवार पर एक लोहे का किवाड़ दिखाया "इस दीवार में शायद कोई सुरंग है। न जाने उसमें क्या है!"

राजा ने शम्भु की ओर मुड़कर पूछा—"इस सुरंग में क्या चीज़ें हैं! सूची में उनको क्यों नहीं लिखा!"

"महाराजा, क्षमा कीजिये, इस सुरंग में जो है, वह मेरी अपनी सम्पत्ति है, वह मेरे लिये अमूल्य है, इसलिये मैंने उसको आपकी सूची में नहीं दिखाया था।" शम्भु ने कहा।

यह कहते ही, राजा ने सोचा। जो कुछ अधिकारियों ने कहा था, वह सब साबित हो गया था, ठीक था। उसने गुस्से में कहा—"पहिले इस सुरंग का किवाड़ खोलो।"

शम्भु ने लोहे का किवाड़ खोला। दीवार की एक अलमारी में गड़रियोंवाला कम्बल, पुरानी चप्पल, एक बाँसुरी दिखाई दी।

राजा ने आश्चर्य से पूछा—"यही है तेरी बहुमूल्य सम्पत्ति?"

"हाँ, महाराजा, आपके पिताजी की नौकरी में आने से पहिले मेरी यही सम्पत्ति थी। नौकरी में जबसे आया हूँ, तब से, सुख क्या चीज़ है, यह मैं नहीं जानता। मैं तभी तक सुखी रहा, जब तक वह सम्पत्ति मेरे पास थी।" शम्भु ने कहा।

—राजा, शम्भु की बात सुनकर बड़ा प्रभावित हुआ। उसने शम्भु के प्रति पिता से भी अधिक आदर-सम्मान दिखाया और जिस जिसने उसके बारे में चुगली की थी, उनको नौकरी से निकाल दिया।

चोर पकड़ा गया

चटपटी बातें

★
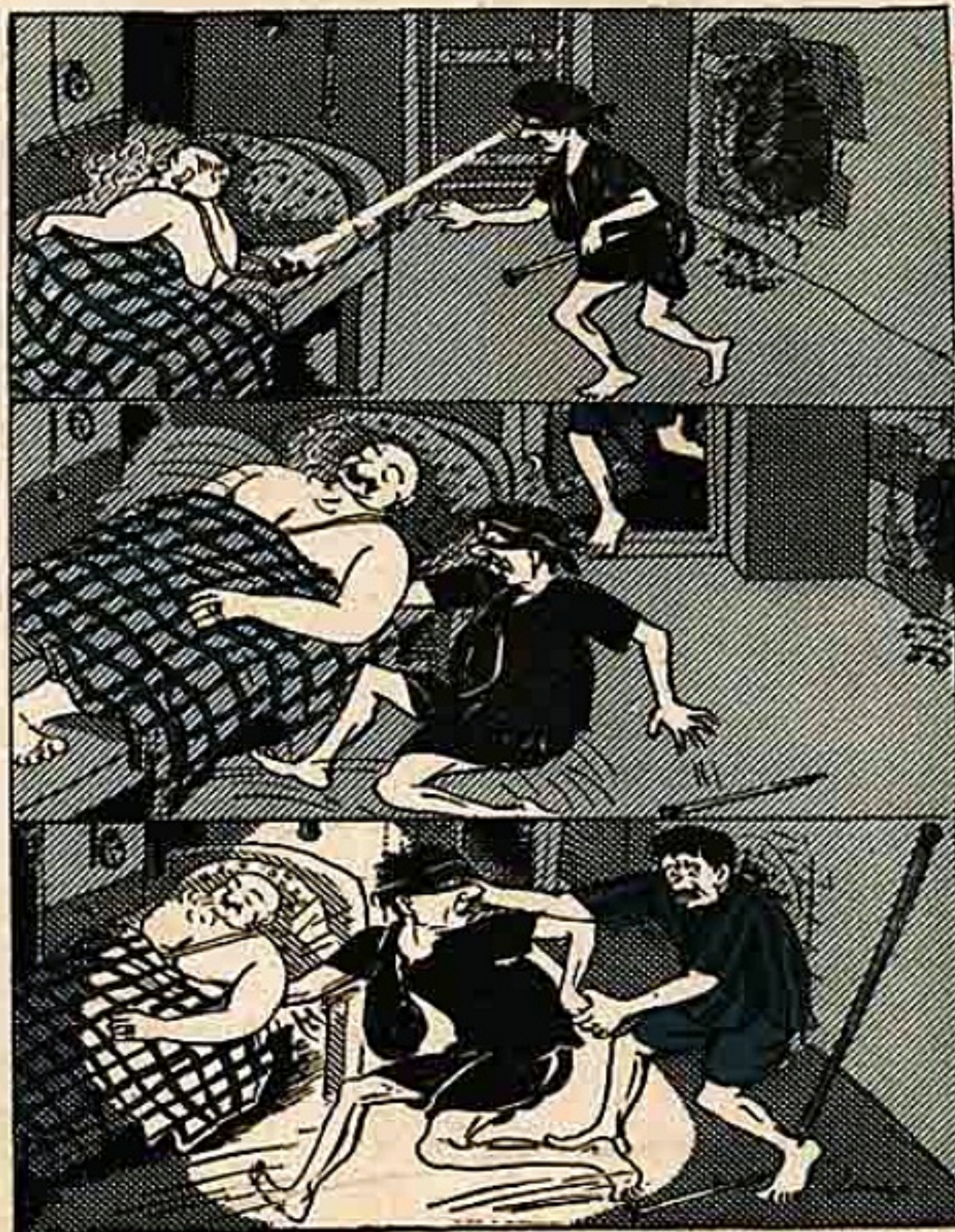
वकील: (फरियादी से) क्या आप सही सही कह सकते हैं कि अपराधी ही आपकी साईकल ले गया था!

फरियादी: इससे पहिले तो शायद बताता भी, परन्तु आपके इतने प्रश्नों के बाद मुझे तो यह सन्देह होने लगा है कि मेरी साईकल थी भी कि नहीं।

*　　　*　　　*

उपाध्याय: भूमि को कौन उठाये हुए है, गोपी!

गोपी: आदिशेष।

उपा: और आदिशेष को?

गोपी: आदि कूर्म।

उपा: और आदि कूर्म को?

गोपी: शायद मेरे श्वसुर।

*　　　*　　　*

आप और आपकी पत्नी, सुना है तमिल सीख रहे हैं!

"हां, हम उत्तर के हैं और एक दक्षिण के लड़के को पाल पोस रहे हैं। अगर वह बातें करने लगेगा तो हम समझेंगे कैसे! इसलिए हम तमिल सीख रहे हैं।"

*　　　*　　　*

शब्दकोष कैसे तैयार किया जाता है?

ठीक औरतों की बातों की तरह। एक पर एक बात आती चली जाती है।

*　　　*　　　*

सुना? चीन में विवाह से पहिले पति पत्नी आपस में एक दूसरे को नहीं जानते!

"भला किस देश में जानते हैं!"

[५]

तपस्य और भल्लुक नाम के दो भाई, व्यापार करते, पाँच सौ गाड़ियों में समान लाद कर सफ़र करते किरिपाल वन की ओर आये। एक जगह, गाड़ियों के पहिये भूमि में फँस गये। बैलों को सम्भालना पड़ा।

उन दोनों भाईयों ने यह सोचकर कि यह भगवान की कोई माया है, धूप बत्तियों से देवताओं की आराधना की। उस समय उनको वन में बुद्ध दिखाई दिये। उन्होंने उनको खाने केलिए मधु दिया। बुद्धत्व प्राप्त करने के बाद, उन्चास रोज उपवास करने के बाद, उनका यह पहिला पहल आहार था।

बुद्ध ने इन भाइयों को तीन निश्चयों का ज्ञान करवाया—और उनको उपासक के रूप में स्वीकार किया। इस बीच उनकी गाड़ियाँ भूमि में से ऊपर उठ आईं। उन्होंने आगे जाते हुये कहा—"आपका स्मरण बना रहे, इसलिये हमें कोई चीज़ दीजिये।" बुद्ध ने अपने दायें हाथ से अपने सिर के केश दिये। वे उन्हें एक पिटारी में रख कर अपने साथ ले गये।
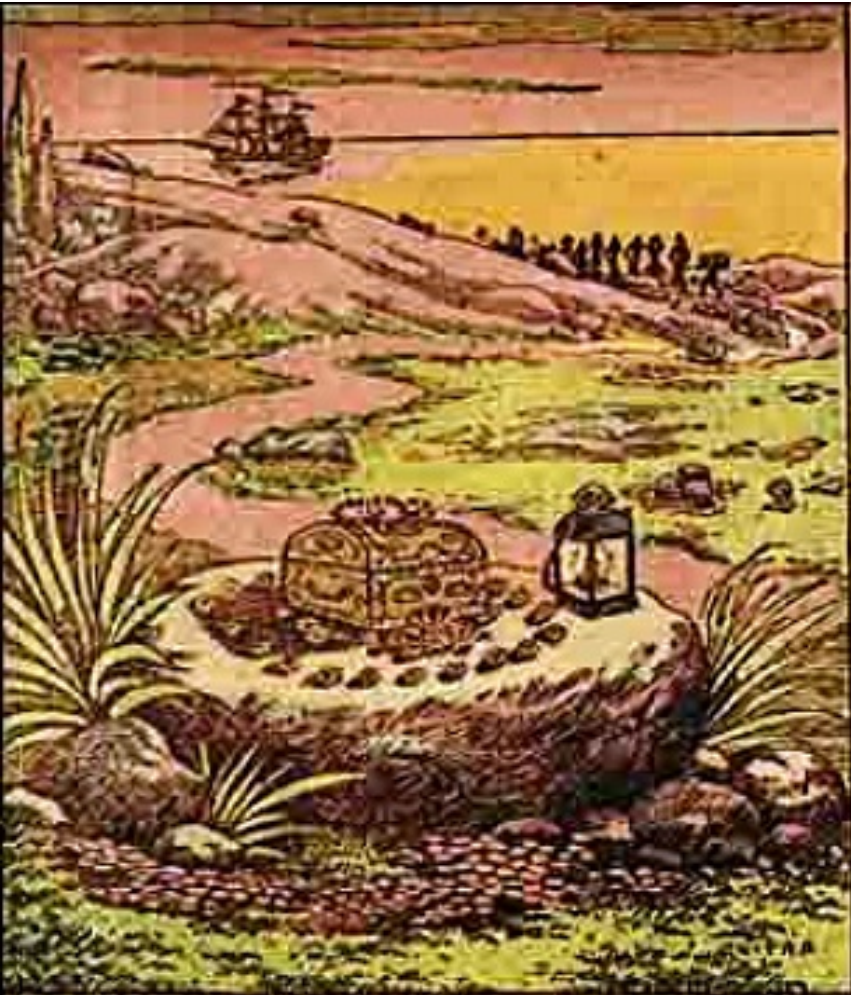
वे भाई धीमे धीमे समुद्र के किनारे पहुँचे और अपना माल नाव में चढ़ाकर, समुद्र यात्रा करने लगे। कुछ दिनों बाद वे सिंहल द्वीप पहुँचे। क्यों कि उनको ईन्धन और जल की जरूरत थी, इसलिये वे नाव को एक बन्दरगाह में ले गये। वे किनारे पर आकर खाना पकाने लगे। उन्होंने उस पिटारी को, जिसमें बुद्ध के केश थे, एक पत्थर पर रखा।

भोजन समाप्त करके जब उन्होंने वापिस नाव में जाना चाहा, तो उन्होंने पिटारी लेनी चाही। पर वह पत्थर से चिपक गई थी। इसलिये आई न। उन्होंने पिटारी के चारों ओर दीप जलाये। फूल रखे। फिर वे अपनी यात्रा पर चले गये। कुछ समय बाद, उस स्थल पर गिरिहन्य विहार बनाया गया।

बुद्ध ने अपने धर्म के बारे में, जिसका उन्हें प्रचार करना था, बहुत कुछ सोचा। मनुष्य पाप के पंक में थे। वे लेशमात्र भी सत्य न जानते थे। व मेरी बातें सुनकर, सत्य जानकर, ठीक कैसे हो सकेंगे—इस विषय पर बुद्ध सोच रहे थे।

बुद्धत्व पाने के साठ दिन बाद, वे पैदल, असिपतन नामक जगह के लिये निकले। यह २४४ मील दूर है और वाराणसी के समीप है। रास्ते में उपक नाम का एक याचक मिला। बुद्ध का रूप व तेज देख वह चकित रह गया। उसने पूछा—"स्वामी, क्या आप ब्रह्मा है, या इन्द्र!"

"मैं न ब्रह्मा हूँ, न इन्द्र ही। जन्म परम्परा क्यों चलती रहती है, उससे कैसे मुक्ति पाई जा सकती है यह जानकर, जो कुछ छोड़ना था, मैंने छोड़ दिया है, जो कुछ जमा करना था जमा कर लिया है—मैं बुद्ध हूँ। मेरा नाम अनन्तजिनम है।" बुद्ध ने कहा।

थोड़ी दूर तक उपक, बुद्ध के साथ चलकर बंगदेश चला गया। वहाँ उसने एक स्त्री से विवाह किया। गृहस्थी में कुछ समय तक, तरह तरह के कष्ट झेलता रहा। फिर वह बुद्ध को खोजता असिपतन आया। और वहाँ बौद्ध होकर, उसने निर्वाण पाया।

जिस दिन वे उपक से मिले थे, उसी दिन बुद्ध असिपतन विहार पहुँचे। ऊरवेल वन में जो कुछ समय तक उनके शिष्य थे, फिर उनमें विश्वास छोड़कर चले गये थे, कौंदिन्य, आदि पाँच तपस्वी, उसी विहार में रहा करते थे।

बुद्ध कुछ दूरी पर थे कि उन्हें पहिचान कर उन्होंने सोचा—"देखो, वह भी यहीं आ रहा है। शरीर तो देखो, सोने की तरह चमक रहा है। लगता है, खूब खा-पी रहा है। मालूम होता है, बुद्धत्व के लिए भी प्रयत्न छोड़ दिया है। अगर वह आये तो हम उसे अपने साथ बैठने देंगे, पर हमारे उठने की कोई जरूरत नहीं है।"

परन्तु जब बुद्ध उनके पास आये, तो वे अपना निश्चय भूल गये, उन्होंने उठकर उनका स्वागत किया। कुशल प्रश्न पूछे।

उसी दिन शाम को बुद्ध ने उस विहार में अपना पहिला उपदेश दिया। उन्होंने कहा कि जो आचार्य बनना चाहते हैं उनको अपनी पापपूर्ण इच्छायें छोड़नी होंगी। ब्राह्मण तपस्वियों के व्रत-उपवास भी छोड़ने होंगे। वे मगध भाषा में इस प्रकार बोले ताकि सब समझ सकें। इस उपदेश के कारण, उन पाँचों में सबसे बड़ा कोन्डिन्य बुद्ध का शिष्य हो गया।

बुद्ध जब असिपतन में थे, उनके पास अनेक लोग आये और उनके शिष्य हो गये। इन शिष्यों में, एक सुजाता का

लड़का, यश भी था। यश, एक दिन रात को छुपा छुपा, बुद्ध के पास आया, बुद्ध ने बड़े प्रेम से उसको बुलाया और उसको अपना शिष्य बना लिया।

सुजाता का पति यह जानकर बड़ा दुःखी हुआ कि उसका लड़का यों बौद्ध हो गया था। बुद्ध ने उसको भी उपदेश दिया, और उसको भी अपने शिष्यों में स्वीकार किया। यश के साथ खेलनेवाले चौरासी बच्चे, उसका मन बहलाने के लिए वहाँ आये। बुद्ध ने उनसे भी बातचीत की और उनको भी अपना शिष्य बना लिया।

तब बुद्ध के शिष्यों में साठ ऐसे थे, जो अर्हत श्रेणी के थे। उनसे बुद्ध ने कहा—"अब आप भिन्न भिन्न दिशाओं में जाकर लोगों को यह बताइये कि बुद्ध का अवतार हुआ है।" अर्हतों के आने के बाद, बुद्ध ऊरवेल वन की ओर निकले। मध्य मार्ग में, एक चौराहे पर, एक पेड़ के नीचे उन्होंने विश्राम किया। उस समय वहाँ बत्तीस क्षत्रिय युवक आये। वे, भद्र वर्ग के उत्तम क्षत्रिय थे। कोशल देश के थे। कोशल ने इनके परिपालन के लिए एक परगना दे रखा था। एक दिन वे अपनी स्त्रियों को लेकर कसशिक नामक सुन्दर प्रदेश को देखने आये। उन बत्तीसों में एक के साथ उसकी पत्नी न थी। रखेल थी। वह उसके आभूषण चुराकर भाग गई। उसको खोजते खोजते, वे बुद्ध के विश्राम स्थल के पास आये। बुद्ध ने उनकी कथा सुनकर कहा—"क्या तुम्हारे लिए दूसरों को खोजना अच्छा है, या अपने को!

क्षत्रिय उनका उद्देश्य समझ गये, वे मान गये कि सब के लिए अपने आप को खोजना ही अच्छा था।

बुद्ध उनका उत्तर सुनकर प्रसन्न हुए। उनको उन्होंने उपदेश दिया। उनको भी अर्हत बनाकर देश विदेश भेजा। इस बार अर्हतों की संख्या ९२ हो गई।

बुद्ध जब ऊरवेल वन वापिस आये, तो उनको एक बात मालूम हुई। समीप ही, एक नदी के किनारे, ऊरवेल काश्यप, गया काश्यप, नदी काश्यप नाम के तीन भाई, विनोद-विलास में समय बिताते, अपने को अर्हत बताकर लोगों को ठग रहे थे। बड़े भाई के, ५०० शिष्य, मँझले के ३०० शिष्य, और सबसे छोटे के २०० शिष्य थे। इन हजार आदमियों को उपदेश देकर, बुद्ध ने उनको सन्मार्ग पर लाना चाहा।

एक दिन वे शाम को, ऊरवेल काश्यप के घर गये। उस दिन रात को, उन्होंने, उनसे, उनके अग्नि गृह में रहने की अनुमति माँगी।

"मुझे कोई आपत्ति नहीं है। परन्तु अग्नि गृह में एक विष सर्प है। हम अर्हत हैं, इसीलिए हम भाइयों का वह कुछ नहीं करता। परन्तु तुम जैसे, जो अर्हत नहीं है, उसके विष के कारण जल जायेंगे।" ऊरवेल ने कहा।

बुद्ध ने उन बातों को अनसुना करके कहा—"मुझे कृपा करके उस अग्निगृह में रहने दीजिये।

"मैंने कह दिया है कि वहाँ विष सर्प है, चाहो, तो सो रहो।" ऊरवेल ने कहा।

उस दिन रात को जहाँ बुद्ध सोये हुए थे, वहाँ विष सर्प आ ही पहुँचा। बुद्ध ने उसको अपने वश में करके, उसका विष निकालकर अपने भिक्षा पात्र में रख लिया।

अगले दिन काश्यप बन्धुओं ने देखा कि विष सर्प बुद्ध के भिक्षा पात्र के चारों ओर लिपटा पड़ा है। वे चकित हुए। उन्होंने बुद्ध से कहा—"तुम विष सर्प को वश करने मात्र से, अर्हत नहीं हो जाओगे।"

फिर बुद्ध ने, तीनों काश्यपों को, और उनके हज़ार शिष्यों को उपदेश दिया। वे सब उनके शिष्य हो गये, और अर्हत श्रेणी में शामिल कर लिए गये।

सिद्धार्थ ने, बिम्बसार को वचन दे रखा था कि बुद्धत्व प्राप्त करने के बाद, राजगृह आकर, वे वहाँ की प्रजा को उपदेश देंगे। इसलिये बुद्ध राजगृह के लिए निकले और राजगृह से, बारह मील दूर, इष्ट वन में, एक पेड़ के नीचे बैठ गये। बुद्ध के साथ उरवेल काश्यप भी था।

बिम्बसार को गुप्तचरों द्वारा मालूम हो गया कि बुद्ध इष्ट वन में विश्राम कर रहे थे। वह, एक लाख, बीस हज़ार आदमियों को लेकर बुद्ध के पास पहुँचा।

बिम्बसार के लोग जानते थे कि उरवेल काश्यप बहुत बड़ा सिद्ध था। उसको अब बुद्ध के साथ देखकर वे निश्चय न कर पाये कि उनमें कौन गुरु था, और कौन शिष्य। उनके सन्देह का निवारण करते हुए उरवेल ने कहा—"सज्जनो। बुद्ध सूर्य हैं। मैं उनके समक्ष पतंगा-सा हूँ।"

उस समय, सर्व प्रथम बुद्ध ने, वहाँ उपस्थित लोगों को जातक कथा सुनाई। उसका सारांश यों था:—

उरवेल पूर्व जन्म में अंगाति नाम का मिथिला देश के एक नगर का राजा था। उसके एक लड़की थी जिसका नाम रुपा था।

अंगाति के मन में क्षुद्र विचार उठे। वह सोचता कि मृत्यु के बाद प्राणी का और कोई जन्म नहीं है। प्राणी मरने पर पंचभूतों में लीन हो जाता है, इसलिए जो कुछ आनन्द लेना है, इसी जन्म में ले लेना है। उसकी पुत्री, रुपा जब अच्छे काम के लिए धन माँगती, तो वह देने से इनकार कर देता। तब बोधिसत्व ने, जो उस समय ब्रह्मा के रुप में था, उसके पास आकर कहा—"क्यों नहीं अपनी लड़की को अच्छे कार्यों के लिए पैसे देते हो!"

"मेरी लड़की को जो कुछ धन चाहिये, अब आप दीजिये मैं मरने के बाद, इस कर्ज का दस गुना कर्ज चुका दूँगा। मैं इतने राज्य का राजा हूँ। आपका पैसा कहीं न जायेगा।" अंगाति ने कहा।

तब बोधिसत्व ने कहा "अरे पगले! तू अब तो राजा है। पर मरने के बाद तेरे पास एक लंगोटी भी न रहेगी। खाने के लिये भी कुछ न रहेगा। तुम नरक में हर तरह के कष्ट भुगतोगे। उस हालत में तुम मेरा कर्ज कैसे चुरा सकोगे। इसलिए मैं तुम्हें कर्ज न दूँगा।"

यह सुन, अंगाति डर गया। उसने अपने विचार बदल लिये....और पुण्य कमाये।

यह जातक कथा सुनाने के बाद, जो उपदेश सुनने आये थे उनको, और बिम्बसार को अपना शिष्य बना लिया। बिम्बसार का जब राज्याभिषेक हुआ था, तब उसकी उम्र सोलह वर्ष की थी, अब उसकी उम्र उनतीस साल थी। उसके बाद, छत्तीस साल, उसने बुद्ध की सहायता में बिताये। (अभी है)

दक्षिण ध्रुव के आश्चर्य

[२]

तिमिंगलों की खाड़ी के बन्दरगाह में जहाजों ने लंगर डाला। जहाजों में से माल किनारे पर पहुँचाया गया। एक शिविर बनाया गया। वहाँ विमानों के उतरने के लिए, कठोर बर्फीली जगह पर एक मार्ग-सा बनाया गया।

तिमिंगलों की खाड़ी का कोई निश्चित क्षेत्र नहीं है। अन्टार्कटिक महाद्वीप के मध्य भाग से, दो बर्फ के पठार-से इस खाड़ी में आये हुये हैं। उनमें से एक का नाम "रास शेल्फ" है। इसका क्षेत्रफल १,६०,००० वर्ग मील है। इसमें ५०० फीट से, लेकर ८०० फीट मोटी बर्फ है। इस बर्फ के पठार का वजन करोड़ों टन है। इस वजन के कारण यह बर्फ का पठार रोज उत्तर की ओर चार फीट बढ़ता है। उसी तरह, जिसतरह बेल्न की वजन से पापड़ फैलता है। ग्लेशियर भी अंगुल अंगुल करके ही आगे बढ़ते हैं। उनके फैलने के कारण भी, बर्फ का बढ़ता वजन ही है।

दूसरे पठार को "प्रेस्ट्रड शेल्फ" कहते हैं। प्रेस्ट्रड नाम के नारवे का नौका शाखाधिकारी क्योंकि पहिले पहल वहाँ गया था इसलिये इसको यह नाम दिया गया है। इस पठार का वायव्य कोण तिमिंगलों की खाड़ी में आता है। यह भी रोज चार फीट हिसाब से, पश्चिम की ओर बढ़ता जाता है। इन दोनों पठारों के विस्तार के कारण—तिमिंगलों की खाड़ी बन्द हो जाती है, आखिर ये दोनों एक दूसरे से टकराते हैं, तब तिमिंगलों की

खाड़ी दिखाई ही नहीं पड़ती। रास समुद्र के बीचों बीच बर्फ़ की दीवार दिखाई देती है। इस दीवार पर से, बड़ी-बड़ी बर्फ़ की सिलें, पानी में गिरकर तैरती रहती हैं। कई बार तो ५०० वर्गमील के बड़े-बड़े भाग भी इस दीवार से अलग होते हैं। बर्ड के साथ गये लोगों ने २० मील ऊंचे बर्फ़ के टुकड़ों को पानी में तैरते देखा। जब ये बर्फ़ के टुकड़े टूट-टूटकर तैरते हैं तभी फिर तिमिंगलों की खाड़ी दिखाई देने लगती है। १९११ में यह खाड़ी दस मील गहरी और दस मील चौड़ी थी। उसके बाद, जो गये उनको यह और भी छोटी लगने लगी।

१९४१ जब बर्ड इस प्रान्त में था, तब अन्वेषकों के लिए जो वहाँ घर बनाये गये थे। वे वहाँ न थे, परन्तु वायव्य दिशा की ओर करीब डेढ़ मील दूरी पर थे। वे घर जो, बर्फ़, खोदकर बनाये गये थे और जिनकी छत जमीन से छूती थी, अब तीन-चार फीट और नीचे दिखाई दिये। दीवारों से और छत से जालों की तरह बर्फ़ लटक रही थी। ६: साल पहिले वे जो खाद्य-पदार्थ छोड़ गये थे, वे बिल्कुल सुरक्षित थे, बिल्कुल न बिगड़े थे, वे फिर खाये जा सकते थे।

इस प्रदेश का नाम "लिटिल अमेरिका" है। यहाँ रेडियो के लिए खम्भे भी लगे हुए हैं।

दक्षिण ध्रुव के चारों ओर की भूमि, पहाड़ों का, वायुयानों द्वारा अध्ययन करने के लिए ही बर्ड उस प्रान्त में आया था। इसके लिए सारी व्यवस्था जल्दी ही कर दी गई।

इसके लिए दो दो इन्जिनवाले ६: वायुयान थे। एक एक वायुयान में पाँच

पाँच आदमी बैठ सकते थे। और साथ फोटोग्राफी के उपकरण, व सामग्री भी रखी जा सकती थी। वे एक बार तेल से भर दिये जाने पर ४५० मील दूर जाकर वापिस आ सकते थे। "लिटिल अमेरिका" से दक्षिण ध्रुव तक इतना फासला भी न था।

"फिलपीन सी" नामक वायुयान वाहक पोत इन वायुयानों को लेकर, स्कोट द्वीप पहुँचा। इस जहाज़ को "लिटिल अमेरिका" पहुँचने के लिए ३०० मील बर्फ़वाले समुद्र में से आना होता, यह इसके लिए सम्भव न था। इसलिए, वायुयान उड़ाकर, "लिटिल अमेरिका" पहुँचाये गये। यह २९ जनवरी के दिन हुआ।

वायुयान में बैठकर दक्षिण ध्रुव के फोटो आदि लेने का कार्यक्रम दो सप्ताह में समाप्त हो गया। हर वायुयान में पाँच पाँच केमरे थे। उनमें से एक वायुयान, राडार की मदद से, भूमि और वायुयान के फासले को मालूम करता रहा। तीन केमरे उस भूमि की फोटो खींचते रहे, जो ऐन वायुयान के नीचे थी। उसी समय
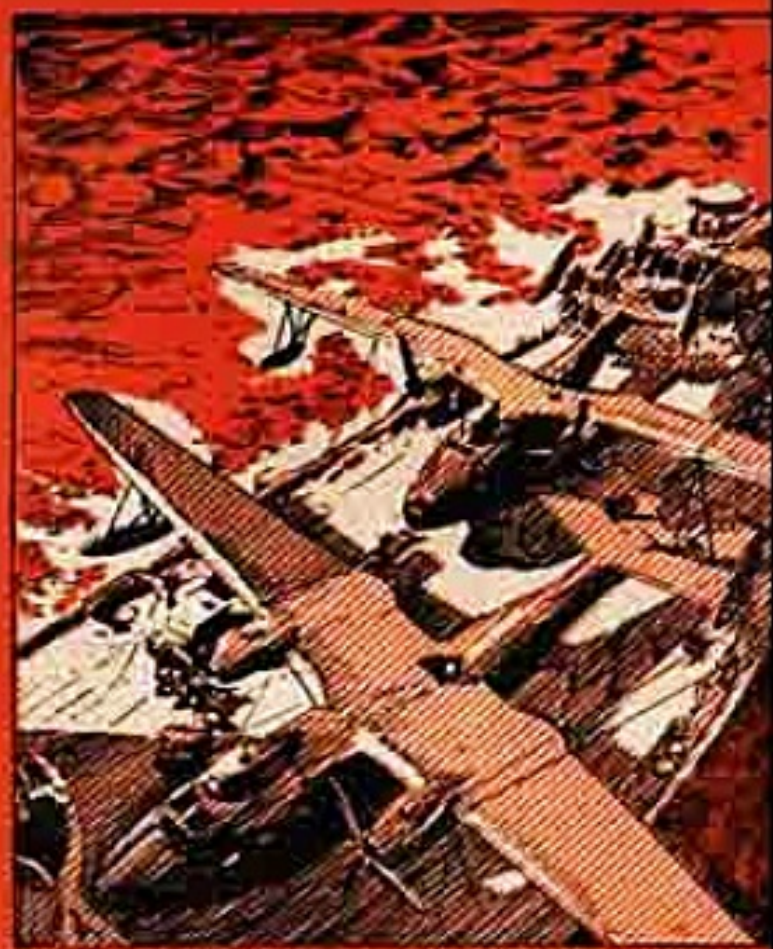
पाँचवा केमरा घड़ी और वायुयान के अनेक यंत्रों की फोटो लेता रहा।

भूमि की फोटो लेनेवाले केमरों में, बीच का ठीक नीचे की भूमि की फोटो लेता। दो केमरे उस केमरे के दोनों तरफ़ लगे रहते, ३० डिग्री कोण पर वे भूमि की फोटो खींचते। इन वायुयानों की मदद से एक लाख वर्गमीलवाले क्षेत्रफल की फोटो एक उड़ान में ली जा सकती है।

दो सप्ताहों में उन वायुयानों ने २९ उड़ानें कीं। इन में १७ तो पूरी तरह सफल रहीं। ३ कुछ अंशों में, बाकी सर्वथा

असफल रहीं। करीब १२० घण्टों तक वायुयान आकाश में रहे। २७,००० मील वे उड़े।

इन अन्वेषणों के फल स्वरूप कई नई बातें मालूम हुईं। रास समुद्र में, कई ऐसे द्वीपों का पता लगा जिनके बारे में पहिले किसी को कुछ न मालूम था। वे पहिले इसलिए न जाने जा सके—क्योंकि उन पर बर्फ ढका हुआ था।

रास समुद्र के पूर्वी किनारे के बारे में जो पहिले जानकारी मिली थी, वह इस बार और साफ़ हो सकी। बर्फ के कारण ही इसके बारे में भी अधिक जानकारी न इकट्ठी की जा सकी थी—जब जमीन को ढकनेवाली बर्फ की परत, समुद्र में बहुत दूर चली जाती है, तो पता नहीं लग पाता कि कहाँ भूमि खतम होती है और कहाँ समुद्र शुरु होता है।

रास बर्फ की दीवार की जब फोटो ली गई—तो उसकी खाडियों, दरारों परतों, आदि को "नक्शे" में निशान लगाकर सूचित किया गया।

तीन ऐसी पर्वत श्रेणियाँ भी पता लगाई गईं, जिनके बारे में पहिले किसी को कुछ न मालूम था। एक पर्वत श्रेणी में, एक ऐसा शिखर पता लगा, जिसकी ऊंचाई १६,००० से, २०,००० फ़ीट हो सकती है। कई नये पर्वत, शिखर, ग्लेशियर—पता लगाये गये। २ लाख वर्गमील के क्षेत्रफल से अधिक ध्रुव प्रदेश का निरीक्षण किया गया। इनका निरीक्षण करनेवाले वायुयान करीब १० हज़ार फ़ीट की ऊँचाई पर उड़े। इस यात्रा में, सबसे अधिक आश्चर्यजनक बात यह मालूम की गई कि रास समुद्र के पश्चिमी किनारे की पर्वत शृंखला के दोनों तरफ़ बर्फ न थी। (अभी है)

उज्जयनी नगर में पाक्याजी नाम का एक महापंडित रहा करता था। उसने सब विद्यायें व शास्त्र सीख रखे थे, पर जादू नहीं सीखा था। पाक्याजी ने सोचा कि यदि उसने यह विद्या भी सीख ली, तो उसका पांडित्य पूरा हो जायेगा।

उज्जयनी नगर में लघुकर्णी नाम का एक प्रसिद्ध जादूगर रहा करता था। एक दिन पाक्याजी ने लघुकर्णी के पास जाकर कहा—"मैंने अनेक गुरुओं के पास सकल शास्त्र व विद्यायें सीखी हैं। मुझे ऐसा कोई गुरु न मिला जो मुझे जादू सिखा सके। यह कमी आप ही पूरी कीजिये। मुझे अपना शिष्य बनाइये और कृपा करके मुझे जादू की विद्या सिखाइये।

यह सुनकर लघुकर्णी ने कहा—"हाँ... हाँ....आप तो महापंडित हैं। और मेरे शिष्य कैसे होंगे!"

"यह न कहिये। जो विद्या देता है, वही गुरु है। मैं क्योंकि राजा के यहाँ काम कर रहा हूँ, इसलिए आपको यथोचित गुरुदक्षिणा भी दे सकूँगा।" पाक्याजी ने कहा।

"अच्छा, तो मैं आपको जादू सिखाना शुरु कर दूँगा। मुझे और कोई गुरुदक्षिणा नहीं चाहिये। मेरा एक ही लड़का है। और उसको मेरे जादू में दिलचस्पी नहीं है वह राजा के यहाँ नौकरी करना चाहता है। आप ज़रा उसकी मदद कीजिये।" लघुकर्णी ने कहा।

"इसमें कौन-सी बड़ी बात है। अगर मैं कहूँ तो राजा मान जायेंगे।" पाक्याजी ने कहा। फिर लघुकर्णी ने कुछ मन्त्र पढ़कर पाक्याजी को जादू सिखाना शुरु किया।

त्रिपाठी

थोड़ा समय बीता। राजा ने पाकयाजी को अपना सलाहकार नियुक्त किया। उसी दिन लघुकर्णी ने पाकयाजी से कहा—"मेरे लड़के के बारे में क्या किया? क्या आप उसे वह नौकरी नहीं दिला सकते हैं, जो आप अब तक करते आये थे?"

"क्यों नहीं दिला सकता! राजा ने उस नौकरी के लायक आदमी सुझाने के लिए मुझसे कहा है। परन्तु मेरे मामा ज़िद कर रहे हैं कि यदि मैंने वह नौकरी उनके लड़के को न दिलवाई तो वह निरशन-व्रत करेंगे। इसलिए इसबार उनकी इच्छा के अनुसार करना पड़ा।" पाकयाजी ने कहा।

"मामा के लड़के को नौकरी देना ही ठीक है। जाने दीजिये। मेरे लड़के को कुछ और नौकरी दिलवाइये।" जादूगर ने कहा।

थोड़ा समय और बीत गया। राजा का प्रधान मन्त्री मर गया। राजा ने पाकयाजी को बुलाकर कहा—"मेरे और भी बहुत से मन्त्री हैं, परन्तु मैं आपको ही प्रधान मन्त्री बनाना चाहता हूँ।"

पाक्याजी सन्तुष्ट हुआ। उसने यह भी सोचा कि क्योंकि वह जादू सीख रहा था इसलिए ही उसको यह उच्च पद मिला था।

उस दिन लघुकर्णी ने पाक्याजी से पूछा—"मेरे लड़के के बारे में! अगर आपने उसको नौकरी दी तो कोई कुछ न कहेगा।"

"हाँ, हाँ, और नौकरी ही क्यों! मैंने उसको राजा का सलाहकार बनाना चाहा। परन्तु मेरे मौसी के पति ने ज़िद पकड़ी कि यदि मैंने उसे यह नौकरी न दी तो वह सन्यास ले लेगा। इसलिए उसे यह नौकरी देनी पड़ी।" पाक्याजी ने कहा।

"ठीक ही है कि आप अपनी मौसी के पति का पहिले ख्याल करें। परन्तु जब कोई अच्छा मौका मिले तो मेरे लड़के को न भूलिये।" लघुकर्णी ने कहा।

कुछ और समय बीता....इस बार राजा मर गया। उसके लड़के न थे। यह समस्या पैदा हुई कि किसका राज्याभिषेक किया जाय। दरबारियों ने एकमत से पाक्याजी को राजा चुना। राजपुरोहित ने शुभमुहूर्त निश्चित करके पाक्याजी का राज्याभिषेक किया।
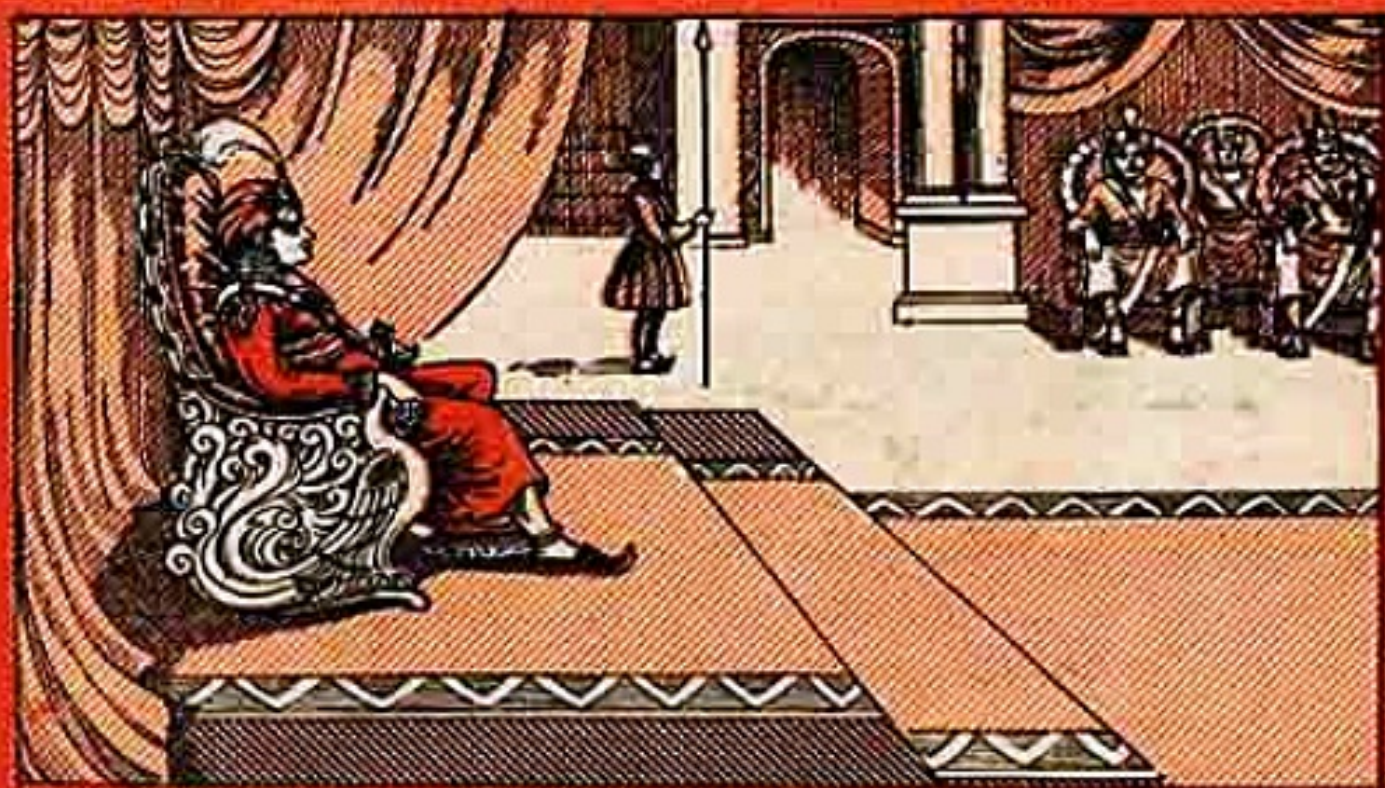
पाकयाजी के ऊपर छत्र उठाया गया। उस पर चामर चलाये गये।

इतने में एक नौकर ने आकर कहा—"महाराज, कोई जादूगर आपके दर्शन के लिए आया हुआ है। हुक्म हो तो अन्दर प्रविष्ट करें।"

पाकयाजी को यह देख गुस्सा आया। स्वर्ग गये फिर भी कष्ट न छूटे। राजा हो गया पर इस जादूगर से छुटकारा न मिला। नौकर से उसने जादूगर को प्रविष्ट करने के लिए कहा।

लघुकर्णी ने आकर पूछा—"महाराज, मेरे लड़के की नौकरी के बारे में क्या कहते हैं!"

"मुझे पता लगा है कि तुम जादू करके, लोगों को तरह तरह से ठग रहे हो। तुम्हे बिना रोक टोक के फिरने देना मेरे लिए खतरनाक है।" कहकर पाकयाजी ने अपने सैनिकों से कहा—"इस नीच को बाँधकर, जेल में डाल दो। इसकी सुनवाई बाद में होगी।"

यह सुन लघुकर्णी कोई मन्त्र पढ़ने लगा। पाकयाजी मूर्छित-सा हो गया। जब उसने आँखें खोलकर देखा, तो पता लगा कि वह जादूगर के घर ही था। सिंहासन, दरबार, छत्र-चामर, नौकर-चाकर कोई न था। कुछ भी न था।

"माफ़ कीजिये! जादू की विद्या को भी, हर किसी को नहीं देना चाहिए। योग्य व्यक्तियों को ही देना चाहिए। मैं आपको यह विद्या नहीं दे सकता।" लघुकर्णी ने कहा।

"जादू की विद्या तो न सीख सका, पर पाकयाजी को पता लगा गया कि जादू क्या चीज़ है।" उसने यह सोच निश्वास छोड़ा। लघुकर्णी से विदा लेकर वह घर चला गया।
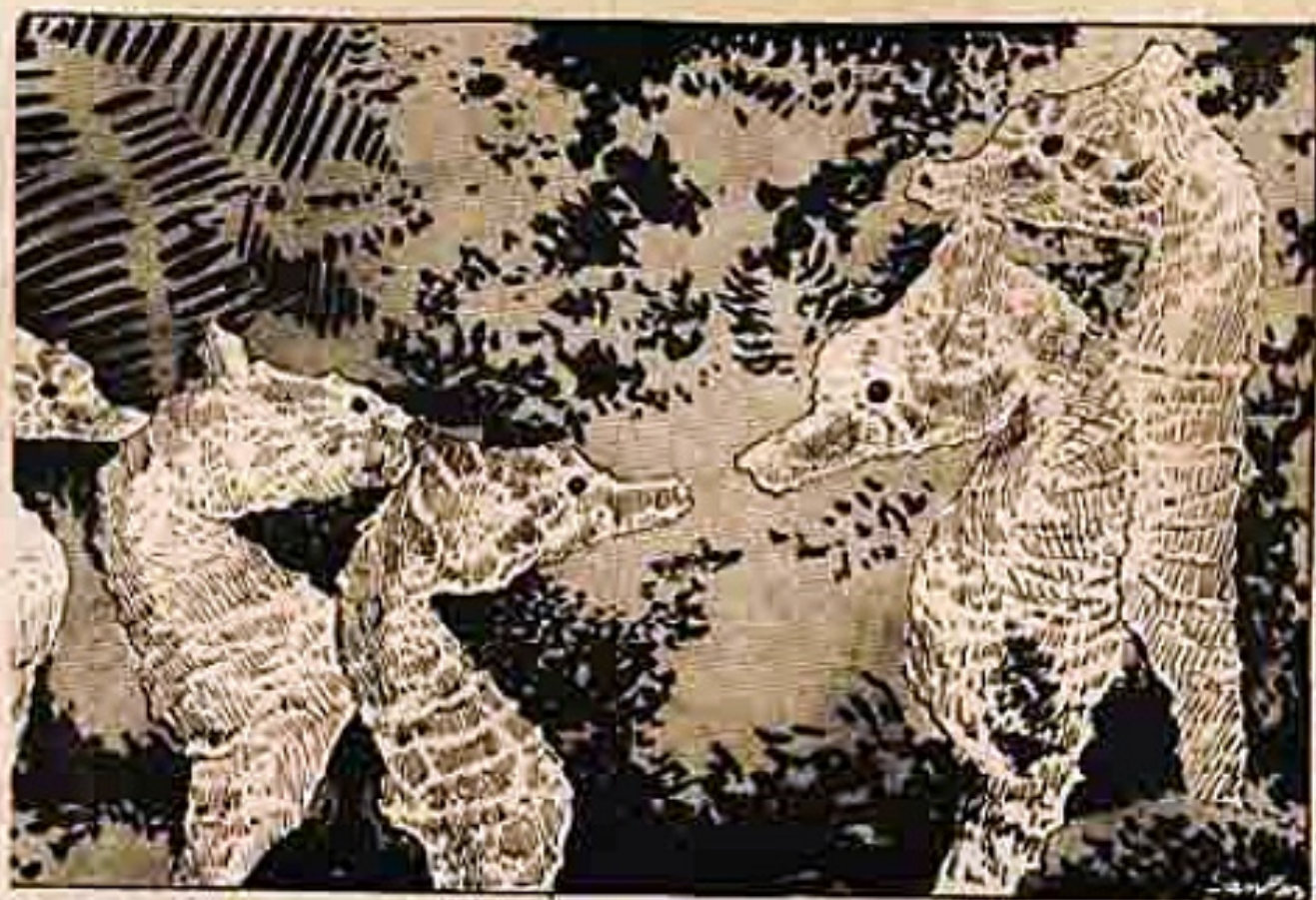
समुद्री घोड़े

समुद्र के जन्तुओं में सबसे अधिक आकर्षक "समुद्री घोड़े" हैं। हम इनको "एकेरियम" में देख सकते हैं। पाश्चात्य देशों में, इनको कई पानी के मर्तबानों में भी रखकर पालते हैं।

प्रायः जो "समुद्री घोड़े" हम देखते हैं, वे बहुत छोटे-बौने से होते हैं। करीब एक अंगुल बड़े होते हैं। परन्तु इनमें कई पाँच छः अंगुल बड़े भी होते हैं। कहा जाता है, जापान और आस्ट्रेलिया के समुद्रों में मछियारे एक फुट बड़े "समुद्री घोड़े" कभी कभी पकड़ते हैं।

ये कई बातों में मछलियों से भिन्न हैं। इनकी पूँछ होती है। वे समुद्र की तह में, एक पौधे से अपनी पूँछ लपेट कर एक जगह खड़े हो, अपना आहार इकठ्ठा कर लेते हैं।

यही नहीं इनकी त्वचा चमकती नहीं है। गले से पूँछ तक हड्डियों के पचास पहिये बने हुये, होते हैं। इन पर कवच सी परत होती है।

मछलियों से तुलना की जाये, तो यही कहना होगा कि ये अच्छी तरह तैर नहीं पाते हैं। इनकी पीठ पर पेट के नीचे पंख होते हैं। इन पंखों को चलाकर वे तैरते हैं। परन्तु इनको एक गज तैरने के लिए पाँच मिनट लगते हैं।

एकेरियम में हम समुद्री घोड़ों का ऊपर नीचे जाना देख सकते हैं। ऊपर उठने के लिए ये अपने शरीर को फैला लेते हैं। नीचे उतरने के लिए समेट लेते हैं।

ये बड़े असहाय जन्तु हैं। बिचारों के दान्त तक नहीं हैं। ये जब अपने आहार के पास पहुँचते हैं तो जोर से मुख में पानी को खींचते हैं। और साथ आये हुये आहार को निगल जाते हैं।

ये जन्तु जो किसी से लड़ झगड़ नहीं पाते हैं, अपनी रक्षा कैसे करते हैं !

"चमड़े के अस्थि पंजर" जैसे उनके शरीर, हो सकता है दूसरों के लिए स्वादिष्ट न हों। यही नहीं स्थल के अनुकूल उनके रंग भी होते हैं। इसी कारण उनकी कुछ रक्षा हो जाती है। "समुद्री घोड़ों" में हरे, सफेद, लाल भूरे, जामुनी, रंग के भी होते हैं। इनको समुद्र से निकाल कर मर्तबानों में रखने से इनका रंग "चला जाता" है। यह इसकी विशेषता है। यही नहीं समुद्री घोड़ा अपने मस्तक पर एक बुलबुला-सा तैयार कर सकता है। उसकी मदद से समुद्र की तट के पौधों में किसी को बिना दीखे ही रह सकता है। उसको वहाँ पहिचानना मुश्किल है।

समुद्री घोड़े का जन्म भी बहुत विचित्र ढंग से होता है। वे माँ के पेट से नहीं पैदा होते, वे पिता के पेट से पैदा होते हैं। मादा समुद्री घोड़ा, नर घोड़े के पेट की पोटली में अंडा रख

देती है। अंडों के रख देने के बाद वह पोटली ज़ोर से बन्द हो जाती है। दस दिन बाद "पिता के गर्भ में से" वे अंडे फूट कर बच्चे हो जाते हैं।

तब नर घोड़े का "प्रसव वेदना" होने लगती है। वह कराहता कराहता एक एक बच्चे को जन्म देता है। वह एक साथ दस बच्चों से ३५ बच्चे तक दे सकता है। बच्चों के बाहर आते ही पिता की पीड़ा समाप्त हो जाती है। वह पोटली फिर बन्द जाती है। या यूँ कहा जाय कि अंडे मादा घोड़े के होते हैं और बच्चे नर के।

पैदा हुए बच्चे कीड़ों की तरह छट पटाते पानी के तह में चले जाते हैं। पर थोड़ी देर में ही वे तैरने लगते हैं। अपनी पूँछ को किसी पौधे से लपेटना शुरु कर देते हैं। इधर उधर देखते बड़ों की तरह वे भी अपनी जीवन यात्रा प्रारम्भ कर देते हैं।

समुद्री घोड़ा एक ही समय में कई दिशाओं में, दोनों तरफ देख सकता है।

हमारी रसायनशालायें :

१. नेशनल फिजिकल लेबोरटरी, नई दिल्ली

१९४३. में इस संस्था को स्थापित करने का निश्चय किया गया। १९४७, जनवरी ४ को प्रधान मन्त्री ने इसका शिलान्यास किया। जनवरी २१ १९५० में स्व. वल्लभ भाई पटेल के करकमलों से इसका उद्घाटन हुआ। इस संस्था के अध्यक्ष हैं, डा. के. एस. कृष्णन, एफ. आर. एस.।

इस संस्था का आहाता ७० एकड़ का है। इसकी इमारत आधुनिक है। इसमें एयर कन्डिशनिन्ग आदि की सुविधायें हैं।

इस संस्था में निम्न विषयों पर परिशोधन हो रहा है। परिमाण, औद्योगिक परिणाम, उत्पादन सामग्री, सिक्के आदि।

इस संस्था में कई यन्त्र भी तैयार किये गए हैं। उनमें से एक यन्त्र यह भी है—जिसके द्वारा सूर्य की किरणों द्वारा भोजन पकाया जा सकता है।

मुरगा भाग निकला

एक दिन एक लोमड़ी एक किसान के घर में आ घुसी और एक मुरगे को लेकर भागने लगी।

यह देख किसान ने औरों को बुलाया। सब मिलकर लोमड़ी का पीछा करने लगे।

इस बीच मुरगे ने अपने प्राण बचाने के लिए एक बात की। उसने लोमड़ी से कहा—"भाई ये मूरख है। ये तेरा पीछा कर रहे हैं पर ये तुझे कभी पकड़ नहीं पायेंगे।"

यह सुन लोमड़ी को बड़ा घमंड हुआ फिर मुरगे ने कहा—"उनको पीछे दौड़ता देख मुझे ही शर्म आ रही है। तुम पीछे मुड़कर क्यों नहीं कहते ! आप सब चले जाओ। यह मेरा मुरगा है।"

लोमड़ी को यह सलाह जंची। उसने मुख में रखा मुरगा छोड़ दिया। और पीछा करने वालों से मुरगे ने जो कहा था, कहा।

और इतने में मुरगा बचकर निकल गया।

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता

अगस्त १९५९ :: पारितोषिक ११)

कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजें।

ऊपर के फ़ोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिये। परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्द की हों और परस्पर संबन्धित हों। परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही लिख कर निम्नलिखित पते पर ता. ७, जून '५९ के अन्दर भेजनी चाहिये।

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता
चन्दामामा प्रकाशन
वडपलनी :: मद्रास - २६

जून – प्रतियोगिता – फल

जून के फ़ोटो के लिए निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गई हैं। इनके प्रेषक को १० रु. का पुरस्कार मिलेगा।

पहिला फ़ोटो : गिरे क्यों?
दूसरा फ़ोटो : झूल रहे थे?
प्रेषक : हरि अग्रवाल
C/O हरिहरनाथ अग्रवाल, किताबवाले, मोती कटरा, मकान नं. २२९५, आगरा।

चित्र - कथा

एक दिन दास और वास एक बाग में गेंद खेल रहे थे कि बाग में काम करनेवाले चौकीदार ने आकर उनकी गेंद नहर में फेंक दी और उनको जाने के लिए कहा। यह देख, "टाइगर" पेड़ के नीचे रखी, चौकीदार की चप्पल मुख में रखकर, नहर की ओर दौड़ा। चौकीदार उसके पीछे भागा। परन्तु इस बीच "टाइगर" चप्पल को नहर में फेंक उस पार चला गया। चौकीदार ने अपनी चप्पलें बहुत खोजीं पर वे कहीं न मिलीं।

Printed by B. NAGI REDDI at the B. N. K. Press Private Ltd., and Published by B. VENUGOPAL REDDI for Sarada Binding Works,

हम प्रत्येक व्यक्ति और व्यापारिक संस्था को आश्वासन देना चाहते हैं कि कलात्मक सृजन, स्पष्टतम कार्य-निपुणता, आकर्षक मुद्रण और शीघ्र वितरण हमारा ध्येय है।
*
हिन्दी, अंग्रेजी, तेलुगु, तमिल, कन्नड़, मराठी, गुजराती, मलयालम और उड़िया में छपाई का कार्य लिया जाता है।
*
दि बी. एन. के. प्रेस
(प्राइवेट) लिमिटेड
चन्दामामा बिल्डिंग्स :: मद्रास-२६
टेलिफ़ोन :
८८८५१-३ लाइन्स

हमारी रानी माँ

हमारे पड़ोस में एक छोटा सा घर है। इस में रानी माँ रहती है। जब हम अपनी छत पर खड़े होते हैं तो नीचे आँगन में रानी माँ को कभी चरखा कातते देखते हैं तो कभी स्वैटर बुनते।

एक दिन मैं ऊपर खड़ी धूप में बाल सुखा रही थी कि नज़र रानी माँ पर पड़ी। चरखा सामने धरा है लेकिन रानी माँ कात नहीं रही। मैं ने सोचा चलो दोनों मिल कर कुछ आपबीती और कुछ जगबीती की बातें करेंगे। रानी माँ के पास पहुँची तो उस ने पीढ़ी आगे खिसका कर कहा, "अब मैं इतनी भोली भी नहीं जो इस बात को सच समझ बैठूँ कि रूस ने आजकल आसमान पर नया सितारा चढ़ाया है जिस में एक कुत्ता भी बंद है"।

मैं ने रानी माँ को स्पूटनिक और लायका के बारे में कुछ बताया तो उस ने दाँतों तले उंगली दबा ली। "भगवान तुम्हारा भला करे," उस ने कहा, "अब पूरी तरह समझ गई। मैं मोटी बुद्धि की हूँ, जरा देर से समझती हूँ।"

यह बात तो नहीं कि रानी माँ मोटी बुद्धि की है। बच्चे जब अपना पाठ ऊँचे ऊँचे पढ़ते हैं तो उन से सवाल पूछ पूछ कर आप भी बहुत कुछ सीख गई हैं। दूसरी औरतों की तरह नहीं कि लकीर की फ़क़ीर बनी रहें।

अब उस दिन की बात है। मैं बाज़ार जा रही थी कि रानी माँ ने कहा, "बेटी तकलीफ़ न हो तो मेरे लिए कपड़े धोने का साबुन ले आना।" मैं अपनी आदत से मजबूर सनलाइट

Photo by N. V. Mithani

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

झूम रहे थे!

प्रेषक :
रवि अग्रवाल, आगरा

CHANDAMAMA (Hindi) JUNE 1959 Regd. No. M. 5452

बुद्ध चरित्र